ब्राह्मण पथ प्रदीप

भाग (१)

ग्रन्थकर्ता :—

ज्योतिषाचार्य पं० भगवान सहाय पांडे

श्री आदि गौड़

सम्वत २०२४

मूल्य २) रु.

ॐ

ब्राह्मण पथ प्रदीप

भाग (१)

ग्रन्थकर्ता :—

ज्योतिषाचार्य पं० भगवान सहाय पांडे

परिचित
१०)
मूल्य ३) रु

सम्वत् २०२८

प्रकाशक :—

भारद्वाज ज्योतिष कार्यालय, बौंलका

त० राजगढ़, जिला :—अलवर

(राजस्थान)

प्रथम संस्करण सन् १९७२ ई०

सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रक :—

जयपुर इलैक्ट्रिक प्रिंटिङ्ग वर्क्स,

चौड़ा रास्ता जयपुर ।

दो-शब्द

ब्राह्मण बन्धुओं की वर्तमान स्थिति को देखकर इस पुस्तक का श्री गणेश किया गया। इस युग में विप्र बन्धुओं का सम्मान पूर्ववत् नहीं हो रहा है। उसका मूल कारण यही देखने में आया है कि वे अपने कर्तव्य से अलग से होते जा रहे हैं। तथा भिक्षा वृत्ति को अपनाते जा रहे हैं। भिक्षा के द्वारा प्राप्त अन्न को खाने से मन मलिन होता है। अपनी भुजा के बल से उपार्जित अन्न के भक्षण से ही सद्बुद्धि आती है। तथा मानसिक और बौद्धिक विकास के लिये यज्ञोपवीत संस्कार करवा कर संध्या करना परमावश्यक है।

इस पुस्तक को लिखने का मूल उद्देश्य यही रहा है कि समस्त ब्राह्मण बन्धु अपने प्रतिदिन के धार्मिक कर्म को शास्त्रोक्त विधि के साथ करें। उक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिये इस पुस्तक में सन्ध्या प्रकरण, यज्ञोपवीत प्रकरण, पूजन प्रकरण और मिश्रित प्रकरण दिये गये हैं। जहां उचित समझा है वहां पर हिन्दी में अर्थ भी स्पष्ट कर दिया गया है। पुस्तक को सरल और अधिक लाभप्रद बनाने का भरसक प्रयत्न किया गया है।

पुस्तक का पांचवा प्रकरण आदि गौड़ ब्राह्मणोत्पत्ति का है। इस प्रकरण में ब्राह्मणोत्पत्ति के सम्बन्ध में प्रश्न व उत्तर के साथ प्रत्येक गोत्र की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की गया है। आशा करता हूं कि यह पुस्तक आपका मार्ग दर्शन करने में सफल सिद्ध होगी।

पाठक यदि इस "ब्राह्मण पथ प्रदीप" भाग १ को अपना कर

* समर्पण *

पूज्य-श्रद्धास्पदा माता श्रीमती चौथी देवी तथापूज्य-श्रद्धास्पद पिता पण्डित श्री रामधन जी भारद्वाज (जिनका पार्थिव शरीर अब इस संसार में नहीं है) के प्रति परम श्रद्धा से यह "ब्राह्मण पथ प्रदीप" पुष्प के रूप में उनके चरणों में अर्पित करता हूँ। जिनकी छत्रछाया में पले और इस शरीर ने अपार सुख का अनुभव किया। जिनकी प्रेरणा से "ब्राह्मण पथ प्रदीप" ग्रन्थ लिखा गया।

ज्योतिषाचार्य पं० भगवान सहाय पांडे
(बौलका)

ग्रन्थकर्त्ता

ज्योतिषाचार्य पं० भगवान सहाय पांडे
शासन–हरितवाल
बौलका
त०–राजगढ़, जि०–अलवर
(राजस्थान)

संध्या–प्रकरण

क्र० सं०	विषय	पृष्ठांक
१	मंगला चरण	१
२	वेदोक्त गायत्री (गुरु) मंत्र	२
३	शान्ति पाठ	३
४	प्रातः प्रथम कर दर्शन मंत्र	४
५	मातृ भूमि से क्षमा याचना मंत्र ...	,,
६	शिखा बंधन मंत्र	,,
७	शिखा बंधन की आवश्यकता	,,
८	चन्दन धारण करने का मंत्र	,,
९	आचमन का मंत्र	,,
१०	हृदय पवित्र करने का विनियोग व मंत्र ...	५
११	आसन पवित्र करने का विनियोग व मंत्र ...	,,
१२	असान का प्रमाण	६
१३	यज्ञोपवीत धारण करने का मंत्र ...	,,
१४	जीर्ण यज्ञोपवीत त्यागने का मंत्र	,,
१५	भोजन करने का मंत्र	,,

क्र० सं०	विषय	पृष्ठांक
१६	भोजन के समय की अन्य बातें	,,
१७	भूदेव पूजन तथा तिलक मंत्र	६
१८	यजमान के तिलक करने का मंत्र ...	,,
१९	यजमान के रक्षा बन्धन का मंत्र ...	,,
२०	संध्या का वर्णन व समय	१०
२१	शांति पाठ मंत्र	११
२२	गायत्री शाप विमोचन	१२
२३	गायत्री नित्य हवन विधि	१४

यज्ञोपवीत–प्रकरण

२४	यज्ञोपवीत का महत्व	२२
२५	उपनयन संस्कार का समय	२३
२६	उपनयन की विशालता	२४
२७	जनेऊ कितने धारण करें	,,
२८	जीर्ण यज्ञोपवीत बदलना	२५
२९	यज्ञोपवीत का रंग	,,
३०	जनेऊ की लम्बाई	२६
३१	जनेऊ निर्माण विधि	,,

पूजन–प्रकरण

३२	संकल्प	२८
३३	प्रथम गणपति पूजा का कारण ...	२९

क्र० सं०	विषय	पृष्ठांक
३४	गणपति पूजन विधि	३१
३५	वरुण पूजा	३४
३६	रक्षा विधान	३६
३७	शान्ति पाठ	३८
३८	लघु शान्ति पाठ	४२
३९	कलश स्थापन	४३
४०	मातृका पूजन का कारण	४८
४१	मातृका पूजन विधि	,,
४२	षोड़श मातृकाओं की जानकारी ...	५१
४३	नवग्रह पूजन का कारण ...	५२
४४	नवग्रह पूजन विधि	५३

मिश्रित–प्रकरण

४५	श्रीराम स्तुति	६०
४६	रामायण सार (एक श्लोक) ...	६१
४७	भागवत सार (एक श्लोक) ...	६२
४८	गीता सार	,,
४९	श्री हनुमान स्तुति	,,
५०	अन्न पूर्ण स्तुति	६३
५१	पीपल स्तुति	,,
५२	तुलसी स्तुति	,,

क्र०	सं० विषय			पृष्ठाङ्क
५३	भगवान विष्णु ध्यान	...	...	,,
५४	भगवान शिव ध्यान	...	...	६४
५५	व्याधि रहित पूर्णायु मंत्र	...	...	६५
५६	महापातक नाश मंत्र	...	...	,,
५७	दुःस्वप्न व अपशकुन नाश मंत्र		...	,,
५८	सौभाग्य वर्धक मंत्र	...	...	,,
५९	व्याधि से मुक्ति	...	...	६६
६०	विष बाधा से मुक्ति मंत्र	...	...	,,
६१	घोर संकट से मुक्ति मंत्र	...	...	,,
६२	भव बाधा से मुक्ति मंत्र	...	...	,,
६३	क्षुधा बाधा से मुक्ति मंत्र	...	...	,,
६४	तृषा बाधा से मुक्ति मंत्र	...	...	,,
६५	काम बाधा से मुक्ति मंत्र	...	...	६७
६६	महा बाधा से मुक्ति मंत्र	...	...	,,
६७	अर्थ लाभ और विजय प्रद मन्त्र		...	,,
६८	नेत्र रोग से मुक्ति मन्त्र	...	...	,,
६९	भोजन पाचन शक्ति मन्त्र	...	..	६८

ब्राह्मणोत्पत्ति—प्रकरण

७०	ब्राह्मण-परिचय	...	...	७०
७१	ब्राह्मण-महिमा	...	...	७१

क्र०	सं० विषय			पृष्ठाङ्क
७२	ब्राह्मण सम्बन्धी प्रश्न	...	...	,,
७३	ब्राह्मन कौन है ?	...	...	७३
७४	मूर्ख ब्राह्मण सब कार्यों में त्याज्य है		...	७५
७५	गीता के अनुसार ब्राह्मण के लक्षण		...	७६
७६	वेदों की रचना	...	...	७७
७७	छः दर्शनों की रचना	...	...	७८
७८	आदि गौड़ ब्राह्मणोत्पत्ति	...	...	८४
७९	अत्रि गोत्र	...	...	९१
८०	अंगिरा गोत्र	...	...	९२
८१	उपमन्यु गोत्र	...	...	९३
८२	अघमर्षण गोत्र	...	...	९४
८३	उद्दालक गोत्र	...	...	९५
८४	कविष्ठ गोत्र	...	...	९६
८५	कश्यप गोत्र	...	...	९७
८६	काण्वायन गोत्र	...	...	९८
८७	कौडिन्य गोत्र	...	...	९९
८८	कौशिक गोत्र	...	...	१००
८९	कौल गोत्र	...	...	१०१
९०	कौशल्यस्नु गोत्र	...	...	१०२
९१	गर्ग गोत्र	...	...	१०३
९२	गौतम गोत्र	...	...	१०४

क्र० सं०	विषय					वृष्ठांक
९३	जातुकर्ण्य गोत्र	...	...			१०५
९४	जैमिनी गोत्र	...	...			१०६
९५	धनञ्जय गोत्र	...	...			१०७
९६	पाराशर गोत्र	...	...			१०८
९७	भारद्वाज गोत्र	...	...			१०९
९८	भार्गव गोत्र	...	...			११०
९९	मौदगल्य गोत्र	...	...			१११
१००	यमदग्नि गोत्र	...				११२
१०१	वत्स गोत्र	...	...			११३
१०२	वरवंगन गोत्र	...	...			११४
१०३	वाशिष्ठ गोत्र	...	...			११५
१०४	वामदेव गोत्र	...	...			११६
१०५	विश्वामित्र गो	...	...			११७
१०६	बृहस्पति गोत्र	...	...			११८
१०७	शांडिल्य गोत्र	...	...			११९
१०८	शौनक गोत्र	...	...			१२०
१०९	सांकृत गोत्र	...	...			१२१
११०	सोपायन गोत्र	...	...			१२२
१११	शासन, गोत्र व पदवी की सरल सारिणी			...		१२३
११२	ध्यान रखने योग्य बातें	...		...		१४४
११३	ब्राह्मण समुदाय की नामावली	...		...		,,

संध्या प्रकरण

!!! मंगला चरण !!!

यन्मायावशवर्तिविश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा ।
यत्सत्त्वाद मृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः॥
यत्पादप्लवमेकमेवहि भवाम्भोधेस्तितीर्षावताम् ।
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमशीम् हरिम् ॥
दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा ।
पुरतो मारूतिर्यस्य तम् वन्दे रघुनन्दनम् ॥
लोकाभिरामं रणरंगधीरं, राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम् ।
कारुण्यरूपं करुणाकरन्तं, श्री राम चन्द्रं शरणं प्रपद्ये ॥
मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्री रामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

जिनकी माया के वश में ब्रह्मादि देवता, असुर और जगत् है. जिनती सत्यता से सम्पूर्ण जगत् सत्य सा जान पडता है,

जैसे रस्सी में सर्प का भ्रम हो , भव सागर तरने की इच्छा वालों के लिये जिनके चरण ही एक नाव है, सम्पूर्ण कारणो से परे दुःख हरने वाले ईश्वर की जिनका राम यह नाम है, मैं वन्दना करता हूं ।

लक्ष्मणजी जिनके दाहिनी ओर सीता जी बांयी ओर तथा हनुमान जी सामने विराजमान हैं, उन रघुनन्दन की मैं वन्दना करता हूं ।

जो संसार को आनन्द देने वाले, रण में धैर्य धारण करने वाले कमल के समान नेत्रों वाले रघुवंश के स्वामी दया की मूर्ति और करुणा करने वाले हैं, उन श्री रामचन्द्र जी की मैं शरण हूं ।

जो मन के समान गतिवाले वायु के समान वेग वाले जितेन्द्रिय, बुद्धिमानों में श्रेष्ठ पवन पुत्र वानर सेना के सेनापति श्री हनुमान जी की मैं शरण लेता हूं ।

।।। वेदोक्त गायत्री (गुरू) मंत्र ।।।

ॐभूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

शब्दार्थः-ॐ=परमात्मा; भूः=प्राण स्वरूप; भुवः=दुःख नाशक; स्वः=सुख स्वरूप; तत्=उस; सवितु= तेजस्वी; वरेण्य=श्रेष्ठ; भर्गः =पाप नाशक; देवस्य=दिव्य; धीमहि= धारण करें; धियो= बुद्धि; यः=जो; नः=हमारी; प्रचोदयात्= प्रेरित करे ।

सरलार्थः- उस प्राणस्वरुप दुःख नाशक, सुख स्वरुप श्रेष्ठ, तेजस्वी, पाप नाशक देव स्वरूप परमात्मा को अन्तरात्मा में धारण करें, वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करे ।

।।। शान्ति पाठ ।।।

ॐ पूर्णमदः पूर्ण मिदंपूर्णात् पूर्णमुदच्यते
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

शब्दार्थः-ॐ = सच्चिदानन्दघन; अदः=वह परब्रह्म; पूर्णम् =सब प्रकार से पूर्ण है; इदम्= यह (जगत भी) ; पूर्णम् = पूर्ण (ही) है; क्योंकि) पूर्णात् =उसपूर्ण (परब्रह्म) से ही; पूर्णम्=यहपूर्ण; उदच्यते= उत्पन्न हुआ है; पूर्णस्य=पूर्ण के; पूर्णम् =पूर्ण को; आदाय=निकाल लेने पर (भी); पूर्णम्= पूर्ण; एव=ही; अवशिष्यते=बच रहता है ।

व्याख्याः- वह सच्चिदानन्दघन परब्रह्म पुरूषोत्तम सब प्रकार से सदा-सर्वदा परिपूर्ण है । यह जगत् भी उस परब्रह्म से ही पूर्ण है; क्योंकि यह पूर्ण उस पूर्ण पुरूषोतम से ही उत्पन्न हुआ है । इस प्रकार परब्रह्म की पूर्णता से पूर्ण है, इस लिये भी वह परिपूर्ण है । उस पूर्ण ब्रह्म में से पूर्ण को निकाल लेने पर भी वह पूर्ण ही बच रहता है ।

॥ त्रिविध ताप की शान्ति हो ॥

॥। प्रातः प्रथम कर दर्शन मंत्र ॥।

कराग्रे वर्तते लक्ष्मी कर मध्ये सरस्वती ।
करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कर दर्शनम् ॥

॥। मात्र भूमि से क्षमा याचना मंत्र ॥।

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डले ।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यंपादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥

॥। शिखा बन्धन मन्त्र ॥।

चिद्रूपिनी महा माये दिव्य तेजः समन्विते ।
तिष्ठ देवि शिखा मध्ये तेजो वृद्धिक कुरूष्यमे ॥

॥। शिखा बन्धन की आवश्यकता ॥।

स्नाने दाने जपे होमे संध्यायां देवतार्चने ।
शिखा ग्रंथि बिना कर्म न कुर्याद् वै कदाचन ॥

॥। चन्दन धारण करने का मंत्र ॥।

चन्दनन्तु महत्पुण्यं पवित्रम् पापनाशनम् ।
आपदे हरते नित्यं लक्ष्मीस्तिष्ठति सर्वदा ॥

॥। आचमन मंत्र ॥।

ॐ केशवाय नमः ॥१॥ ॐ नारायणाय नमः

॥२॥ ॐ माधवाय नमः ॥३॥

तीन आचमन कर अंगूठे की जड से दो बार होंठों को पोंछकर ॐ हृषीकेशाय नमः कह कर हाथ धोले ।

॥। हृदय पवित्र करने का विनियोग व मंत्र ॥।

ॐ अपवित्रः पवित्रोवेत्यस्य वामदेव ऋषिः ।
विष्णुर्देवता, गायत्री छन्दः,
हृदिपवित्रकरणे विनियोगः॥

मंत्र

ॐ अपवित्रः पवत्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचि ॥

॥। आसन पवित्र करने का विनियोग व मंत्र ॥।

ॐ पृथ्वीति मंत्रस्य मेरूपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः
कूर्मो देवता आसने विनियोगः ॥

मंत्र

ॐ पृथ्वि ! त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वम् च धारय माम् देवि पवित्रम् कुरू चासनम् ॥

।।। आसन प्रमाण ।।।

कृष्णाजिने धनम् पुत्राः मोक्षः श्री व्याघ्रचर्मणि ।
कुशासने ज्ञानवृद्धिः कंबले च उत्तमगतिः ॥
काष्ठासने व्याधिभयम् पाषाणे हानिरेव च ।
वस्त्रासने वृथा पूजा धरण्यां निर्धनो भवेत् ॥

मृग चर्मासन धन पुत्र व मोक्ष दायक, व्याघ्र चर्मासन लक्ष्मी को बढ़ाने वाला, कुशा का आसन ज्ञान वृद्धि करने वाला, कंबल का आसन उत्तम गति को प्रदान करता है। लकडी का आसन व्याधि (रोग) और भय प्रद, पत्थर का आसन हानि पहुंचाने वाला, वस्त्र का आसन पूजा (जप तप, भजन) को निष्फल करने वाला और नग्न जमीन पर बैठ कर पूजा करने से मानव निर्धनता को प्राप्त करता है।

।।। यज्ञोपवीत धारण करने का मंत्र ।।।

ॐ यज्ञोपवीतम् परमम् पवित्रम् प्रजापतेर्यत्-सहजम् पुरस्तात् । आयुष्य मग्र्यम् प्रतिमुञ्च शुभ्रम् यज्ञोपवीतम् बलमस्तु तेजः ।१।

यज्ञोपवीत मसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनो पनह्यामि ।२।

।।। जीर्ण यज्ञोपवीत त्यागने का मंत्र ।।।

एतावद्दिन पर्यन्तम् ब्रह्म त्वम् धारितम् मया । जीर्णत्वा त्वत् परित्यागो गच्छ सूत्र यथा सुखम् ॥

।।। भोजन करने का मंत्र ।।।

ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्य नमी वस्य शुष्मिणः प्रप्रदातारम् तारिष ऊर्ज्जम् नो धेहि द्विपदेशम् चतुष्पदे ।१।

ॐ शान्तिः शान्तिः शांतिः ॥

: भोजन के समय की अन्य बातें :

कैसे पात्र में भोजन न करें ?

मृणमये पर्णपृष्टे वा लौह ताम्र भाजने ।
राश्नीयान्न पिवेच्चैव न करे च तथासने ॥

मिट्टी के पात्र में, पत्ते की पीठ पर (परन्तु अमल पत्र में यह नियम नहीं चलता) आसन पर तथा लोहे और तांबे के पात्र में एवम् हाथ में रोटी लेकर खाना गृहस्थी को मना है।

पत्तल हो तो बड या पीपल की नहीं होनी चाहिये। इससे श्री हानि होती है। पलाश (छीले) की पत्तल ही ग्राह्य है।

पंचार्द्रो भोजनं कुर्यात् प्राङ्मुखो मौनमास्थितः ।
हस्तौ पादौ तथावास्यनेषु पंचार्द्रता मता ॥

दोनों हाथ, दोनों पैर और मुख को जल से आर्द्र कर मौनावस्था में भोजन करना चाहिये ।

पूर्व या पश्चिम दिशा में मुख करके भोजन करना चाहिये । उत्तर दिशा में मुख करके भोजन करना पुत्र एवम् लक्ष्मी की हानि करता है । पगडी, साफा, टोपी आदि उतार कर भोजन करना चाहिये । परमात्मा के अर्पण किये बिना भोजन करना सनातन धर्म के विरुद्ध है ।

भोजनं हवनं दानमुपहार प्रतिग्रहः ।
वहिर्जानु न कार्याणि तद्वदाचमनं स्मृतम् ॥

भोजन, हवन, दान, भेंट देते और लेते समय हाथ को जानु के बाहर नहीं रखना चाहिये ।

भोजन करते समय बायें हाथ से अन्न को कभी स्पर्श न करें ।

इक्षुरातः फलं मूलम् पयस्ताम्बूलमौषधम् ।
भक्षयित्वापि कर्तव्याः स्नान दानादि वा क्रियाः ॥

ईख के रस से बने हुये, फल, मूल, दूध, दधि, पान, सुपारी, औषधी का पंचामृतादि सेवन स्नान, दान, वृतादि में व्यवहार में लेना दोष प्रद नहीं है ।

।।। भूदेव पूजन तथा तिलक मंत्र ।।।

ॐ नमोऽस्त्वंताय सहस्त्र मूर्तये सहस्त्र–पादाक्षिशिरोरुबाहवे सहस्त्र नाम्नेः पुरुषाय तद्विदे सहस्त्र कोटी युग धारिणे नमः ॥

नमः कमल नाभाय नमस्ते जलशायिने ।
नमस्ते कमला कान्त वासुदेव नमोऽस्तुते ॥

-: मोली बांध के यज्ञोपवीत दक्षिणा देने का मंत्र :-

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षायाप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

–: यजमान के तिलक करने का मंत्र :–

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्ध श्रवाः स्वस्ति नः पूषा-विश्ववेदाः स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

–: यजमान के रक्षा-बन्धन मंत्र :–

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः ।
मार्कण्डेयो द्विजो रामः कुर्वन्तु त्वां चिरायुष ॥

–: संध्या का वर्णन :–

समय :–(क) प्रातः काल की संध्या ताराओं के रहते रहते, (ख) मध्याह्न की संध्या जब सूर्य मध्य आकाश में हो तब, (ग) और सांयकाल की संध्या सूर्य के पश्चिम दिशा में चले जाने पर करने का विधान है। इस प्रकार तीन तरह की संध्या प्रतिदिन करनी चाहिये।

प्रातः संध्या का विचारः–सूर्य के उदय होने से पूर्व जब तक तारे दिखाई देते रहें; सन्ध्या का उत्तम काल है।

ताराओ के छिपने से लेकर सूर्य उदय तक मध्यम; तथा सूर्य उदय के पश्चात् अधम काल हैं; यो तीन प्रकार की प्रातः कालीन संध्या बताई गयी है।

सांयकालीन संध्या का विचारः–जब तक सूर्य दिखाई देता रहे, उस समय की गई संध्या उत्तम; सूर्य अस्त के बाद ताराओं के उदय से पहले की हुई संध्या मध्यम; और ताराओं के उदय के पश्चात् की गई सांय-सध्या निम्न श्रेणी की समझी जाती है। सांयकालीन संध्या के ये तीन प्रकार कहे गये है।

विलम्ब से संध्या करने का प्रायश्चितः–द्विज को नित्य उत्तम संध्या उपासना करनी चाहिये। संध्या उपासना के अभाव में किसी भी शुभ कर्म में उसका अधिकार नहीं है।

जब सूर्य उदय और अस्त हो, उस समय से तीन तीन घडी बाद तक संध्या उपासना की जा सकती है। इसके पश्चात् संध्या करने पर प्रायश्चित करना पडता है।

उचित समय बीत जाने पर यदि संध्या की जाय तो चार बार अर्घ्य देना चाहिये। अथवा संध्या उपासना से पूर्व एक सौ आठ (१०८) बार गायत्री का जप करके संध्या उपासना करें। ऐसा करने से विलम्ब का प्रायश्चित होता है।

–: शान्ति पाठ मंत्र :–

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यकर वाव है। तेजस्वि नावधीतमस्तु। मा विद्विषाव है।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

शब्दार्थः– ॐ=पूर्ण ब्रह्म परमात्मन; (आप) नौ=हम दोनों (गुरु-शिष्य) की; सह=साथ साथ; अवतु=रक्षा करें; नो=हम दोनों का; सह=साथ साथ; भुनक्तु=पालन करें; सह=हम दोनों) साथ साथ ही; वीर्यम्=शक्ति; करवाव है=प्राप्त करें; नो=हम दोनों की; अधीतम्=पढी हुई विद्या; तेजस्वि=तेजोमयी; अस्तु=हो; मा विद्विषाव है=हम दोनों गुरु–शिष्य परस्पर द्वेष न करें।

व्याख्याः–हे परमात्मा! आप हम गुरू-शिष्य दोनों की साथ-साथ प्रकार से रक्षा करें; हम दोनों का आप साथ साथ

समुचित रूप से पालन पोषण करें; हम दोनों साथ ही साथ सब प्रकार से बल प्राप्त करें; हम दोनों की अध्ययन की हुई विद्या तेज पूर्ण हो-कही किसी से हम विद्या में परास्त न हों और हम दोनों जीवन भर स्नेह-सूत्र से बंधे रहें; हमारे अन्दर परस्पर कभी द्वेष न हो हे परमात्मन्! तीनों तोपों की निवृत्ति हो।

–: गायत्री शाप विमोचन :–

ब्रह्मा वशिष्ट और विश्वामित्र के प्रदत्त शाप की निवृत्ति के लिये गायत्री शाप विमोचन अवश्य करे। क्यों कि शाप विमोचन किये बिना गायत्री जप सफल नहीं होते है।

–: ब्रह्मा शाप विमोचन :–

विनियोग—ॐ अस्य श्री ब्रह्म शाप विमोचन मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः भुक्ति मुक्ति प्रदा ब्रह्मशाप विमोचनी गायत्री शक्तिर्देवता गायत्री छन्दः ब्रह्म शाप विमोचने विनियोगः॥

मंत्र—ॐ गायत्री ब्रह्मेत्युपासीत् यद्रूपं ब्रह्मविदो विदुः ताम् पश्यन्ति धीराः सुमनसा वाचा मग्रतः। ॐ वेदान्तनाथाय विद्महे हिरण्यगर्भा

धीमहि तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात्। ॐ देवि गायत्रि ? त्वम् ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव।

–: वशिष्ठ शाप विमोचन :–

विनियोग—ॐ अस्य श्री वशिष्ठशाप विमोचन मंत्रस्य निग्रहानु ग्रहकर्ता वशिष्ठ ऋषिः वशिष्ठानुगृहीता गायत्री शक्ति र्देवता विश्वोद्भवा गायत्री छन्दः वशिष्ठ शापविमोचनार्थं जपे विनियोगः॥

मंत्र—ॐ सोहमर्कमयं ज्योतिरात्माज्योतिरहं शिवः। आत्म ज्योति रहं शुक्रः सर्वज्योतिरसोऽस्म्यूहम्। (ऐसा बोल योनिमुद्रा दिखा कर तीन वार गायत्री जपे) ॐ देवि गायत्रि ? त्वम् वशिष्ठ शापाद्विमुक्ता भव॥

–:विश्वामित्र शाप विमोचन :–

विनियोग—ॐ अस्य श्री विश्वामित्रशापविमोचन मंत्रस्य नूतनसृष्टिकर्ता विश्वामित्र ऋषिः विश्वामित्रानुगृहीतागायत्री शक्तिर्देवता वाग्देहा

गायत्री छन्दः विश्वामित्र शापविमोचनार्थं जपे विनियोगः ॥

मंत्र—ॐ गायत्री भजाम्यग्निमुखी विश्वगर्भा यदुद्भवा देवाश्चक्रिरे विश्वमृष्टिं तां कल्याणीमिष्ट्र करी प्रपद्ये यन्मुखाग्निः स्रुतोऽखिलदेवगर्भ ॥ शापयुक्ता तु गायत्री सफला न चदाचन । शापादुत्तारिता सा तु भुक्ति मुक्ति फलप्रदा । ॐ देवि गायत्रि ! त्वम् विश्वामित्र-शापाद्विमुक्ता भव ।

प्रार्थना—ॐ देवि महादेवि संध्ये विद्ये सरस्वति । अजरे अमरे चैव ब्रह्मयोनिर्नमोऽस्तुते ॥ ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव । वशिष्ठ शापाद्विमुक्ताभव । विश्वामित्र शापाद्विमुक्ता भव ॥

—: गायत्री नित्य हवन विधि :-

गायत्री उपासना से हवन का घनिष्ठ संबन्ध है। गायत्री उपासक को अपनी सुविधा और स्थिति के अनुसार हवन भी करते रहना चाहिये। जप के बाद हवन किया जाता है। हवन करना हो तो विसर्जन, अर्घ्यदान आदि उपासना समाप्ति की क्रियायें यज्ञ के बाद ही करनी चाहिए। हवन में

अन्य व्यक्ति भी भाग ले तो उनसे ब्रह्मसंध्या कराके तब हवन में सम्मिलित करना चाहिए।

दैनिक हवन :—

(१) अग्नि स्थापन—कुण्ड वा वेदी को शुद्ध करके उस पर (△) समिधाऐं चिन लें फिर अग्निस्थापना के लिए चम्मच में कपूर या घी में भिगोई हुई रूई की बत्ती को जलाकर उन समिधाओं के बीच में स्थापित करते हुये नीचे लिखे मंत्र का उच्चारण करें:-

मंत्र—ॐ भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीवरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ॥

अग्निं दूतं पुरो धत्ते हव्यवाहमुपब्रुवे। देवांऽ आसादयादिह ॥ ॐ अग्नये नमः ॥ अग्निम् आवाहयामि स्थापयामि। इहागच्छ इह तिष्ठ। इत्याहाह्य पञ्चोपचारैः पूजयेत ॥

(२) अग्नि प्रदीपन—जब अग्नि समिधाओं में प्रवेश कर जावे तब उसे पंखे से प्रज्वलित करें; मुँह से फूंक लगाना वर्जित है।

मंत्राः—ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृ त्वमिष्ठा

पूर्ते स ँ सृजेसामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ॥

(२) समिधाधान—तदन्तर नीचे लिखे चार मंत्रो से छोटी २ चार समिधायें प्रत्येक मंत्र के उच्चारण के बाद क्रम से घृत में डुबो कर अग्नि में छोड दें।

प्रथम समिधा का मंत्र—ॐ अयम् त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व। चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभि र्ब्रह्मवर्चसे नान्नाद्ये न समेधय स्वाहा ॥ इदम् अग्नये जातवेदसे इदम् नमम ॥

द्वितीय समिधा का मंत्र :—ॐ समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयता तिथिम्। अस्मिन हव्या जुहोतन स्वाहा ॥ इदं अग्नये इदं नमम।

तृतीय समिधा का मंत्र :—ॐ सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेद से स्वाहा ॥ इदमग्नये जातवेदसे इदं न मम ॥

चतुर्थ समिधा का मंत्र :—ॐ तंत्वा समग्निरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छीचायविष्ठ्या स्वाहा ॥ इदं अग्नयेऽङ्गिरसे इदं न मम ॥

(४) जल प्रसेचन— तदन्तर आचमनी या अंजलि में जल लेकर पद्म कुण्ड (वेदी) के चारों तरफ नीचे लिखे मंत्रों के साथ छिडकावें।

मन्त्र :—

पूर्व में :—ॐ अदितेऽनुमन्यस्व।

पश्चिम में :—ॐ अनुमतेऽनुमन्यस्व।

उत्तर में :—ॐ सरस्वत्यनुमन्यस्व।

दक्षिण में :—ॐ देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिम् भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनतु वाचस्पतिर्वाचम् नः स्वदतु।

(५) आज्याहुति होमः—नीचे लिखी सात आहुतियाँ केवल घृत की देवें और श्रुवा (घी होमने का चम्मच) से बचा हुआ घृत इदन्नमम उच्चारण के साथ प्रणीता (जल सेभरी हुई कटोरी) में हर आहुति के बाद टपकाते जावें। यह टपकाया हुआ घृत अन्त में अवघ्राण के काम आता है।

(१) ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदं न मम।

(२) ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिंद्राय इदं न मम।

(३) ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम।

(४) ॐ सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय इदंन मम ।
(५) ॐ भूः स्वाहा । इदं अग्नये इदं न मम ।
(६) ॐ भुवः स्वाहा । इदं वायवे इदं न मम ।
(७) ॐ स्वः स्वाहा । इदं सूर्याय इदं न मम ।

(६) गायत्री मंत्र की आहुतियाँ–तदन्तर गायत्री मंत्र से जितनी आहुतियाँ देनी हों हवन सामग्री तथा घृत से देनी चाहिये । यदि दो व्यक्ति हवन करने वाले हों तो एक सामग्री (चरु) तथा दूसरा घृत होमे । यदि एक ही व्यक्ति हवन करने वाला हो तो घृत और चरु (सामग्री) को मिला कर आहुति देवें ।

गायत्री मन्त्र :–

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् । इद ं गायत्र्यै इदं न मम ।

(७) स्विष्टकृत होम–अभीष्ट संख्या में गायत्री हवन मंत्र से आहुतियाँ देने के पश्चात् मिष्टान, खीर, हलुआ आदि पदार्थों की एक आहुति नीचे लिखे मंत्र से देवें ।

मन्त्र :–ॐ यदस्य कर्मणो त्यरीरिचं यद्वान्यूनमिहाकरं अग्निष्टत् स्विष्टकृत् विद्यात्सर्व स्त्रिष्टं सुहुतं करोतुमे । अग्नये स्विष्टकृतो सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामनाम् समधयित्रे सर्वान्नः कामान् समेधय स्वाहा । इदं अग्नये स्विष्टकृतो इदं न मम ॥

(८) पूर्णाहुति—इसके बाद स्रुचि चम्मच में घी समेत सुपारी (सुपारी) रखकर पूर्ण आहुति नीचे लिखे मंत्र से देवें ।

मन्त्र :–ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥
ॐ पूर्णादर्विपरापत सुपूर्णा पुनरापत ।
वस्नेव विक्रीणा वहाऽइषमूर्जं शतक्रतो स्वाहा ॥
ॐ सर्वं वै पूर्णं स्वाहा ।

(९) वसोधारा–हवन चम्मच (स्रुवा) में घृत भर कर धीरे धीरे धार बाँध कर हवन की वेदी पर नीचे लिखे मंत्र के साथ छोडे ।

मंत्र :–ॐ वसो पवित्र मसि शतधारम् वसो पवित्रमसि सहस्त्र धारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसो पवित्रेण शत धारेण सुप्त्वा कामधुक्षः स्वाहा ॥

(१०) आरती—इसके पश्चात् नीचे लिखे मंत्रों को पढ़ते हुए आरती उतारें।

मन्त्रः—यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः। वेदैः साङ्ग पदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः॥ ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो। यस्यान्तम् न विदुः सुरासुरगणाः देवाय तस्मै नमः॥

(११) घृत अवघ्राण—प्रणीता पात्र (जल की कटोरी) में 'इदमून मम' के साथ टपकाये हुए घृत को हथेलियो पर लगा कर अग्नि पर सेकें और उसे सूंघे तथा मुख, नेत्र, कान आदि पर निम्क मंत्रों के साथ लगावें।

मन्त्र :—ॐ तनूपा अग्नेसि तन्व मे पाहि।
ॐ आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि।
ॐ वर्चोदा अग्नेसि वर्चो मे देहि।
ॐ अग्ने यन्ये तन्वा उनन्तन्म आपृण।
ॐ मेधां में देवी सरस्वती आदधातु।
ॐ मेधा में देवः सविता आदधातु।
ॐ मेधां में अश्विनौ देवा वाधतां पुष्कर स्रजौ

(१२) भस्म धारण—स्रुवा से यज्ञ भस्म लेकर अनामिका अंगुली से नीचे लिखे मंत्रों द्वारा ललाट, ग्रीवा, दक्षिण बाहुमूल तथा हृदय पर लगावे।

मंत्र :—ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे।
ॐ कश्यपस्य त्रायुषमिति ग्रीवायाम्।
ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिण बाहुमूले।
ॐ तन्नोऽस्तु त्र्यायुषमिति हृदि।

(१३) शान्ति पाठ—हाथ जोड़ कर सब के कल्याण के लिए शान्ति पाठ करें।

मन्त्र :—ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरौषधयः शान्तिः बनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मा शान्तिः सर्व ँ शान्तिरेव शान्तिः समा शान्तिरेधि॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।
सर्वारिष्टा सुशान्तिर्भवतु॥

卐 यज्ञोपवीत प्रकरण 卐

यज्ञोपवीत का महत्व :—

प्रिय बन्धुओं !

धर्म प्राण इस आर्यावर्त में बालकों को तेजस्वी, मेधा सम्पन्न बनाने के लिये ऋषि-मुनियों ने वेद विहित सोलह संस्कारों को प्रचलित किया था। परन्तु हमारी धर्म निरपेक्षता से विवाह के अतिरिक्त शेष सारे ही संस्कार लुप्त से होते जा रहे हैं। यहां तक कि उपनयन (यज्ञोपवीत) जैसे महत्वपूर्ण संस्कार को भी २५% द्विज बन्धुओं के सिवाय सभी द्विज बन्धुओं ने त्याग सा दिया है।

इस भूमंडल पर निवास करने वाली अन्य समस्त जातियों से ब्राह्मण जाति की कुछ विशेषता आरम्भ से ही रही हैं। यज्ञादि धार्मिक कर्म आदि से ही चले आये हैं। वह सूत्र जो यज्ञादि धार्मिक कर्म करने का अधिकार प्रदान करे वह यज्ञोपवीत कहलाता है। जब तक द्विज सन्तान का यज्ञोपवीत संस्कार नहीं होता है; तब तक उस बालक को धार्मिक कर्म करने का अधिकार प्राप्त नहीं होता है; यदि द्विज बालक बिना यज्ञोपवीत धारण किये हुये धार्मिक कर्म करता है तो उसके कर्म निष्फल जाते हैं।

मनु आदि स्मृतिकारों ने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—ये चार ही वर्ण कहे हैं। इन सब में ब्राह्मण श्रेष्ठ है। ब्राह्मण, क्षत्रिय और शैश्य—ये तीन द्विज कहे गये हैं। इनका पहला जन्म माता से और दूसरा जन्म उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार से होता है। द्वि का अर्थ है दो बार, ज का अर्थ है जन्म लेने वाला, दोनों का सम्मिलित अर्थ है दो बार जन्म लेने वाला। अतः क्षत्रिय और वैश्य को भी विधि विधान के के साथ यज्ञोपवीत संस्कार कराना चाहिये) उक्त दो कारणों से तीनों वर्णों के लोग द्विजत्व प्राप्त करते हैं।

उपनयन संस्कार का समय

गर्भ से अथवा जन्म से आठवें वर्ष में ब्राह्मण का उपनयन संस्कार होना चाहिये। विद्वान पुरुष सोलहवें वर्ष तक उपनयन संस्कार का गौणकाल बतलाते हैं।

गर्भ से या जन्म से ग्यारहवें वर्ष में क्षत्रिय के उपनयन का मुख्य काल है। उसके लिये बाईसवें वर्ष तक यज्ञोपवीत-संस्कार का गौणकाल निश्चित करते हैं।

गर्भ से या जन्म से बारहवें वर्ष में वैश्य का उपनयन संस्कार उचित कहा गया है। उसके लिये चौबीसवें वर्ष तक यज्ञोपवती संस्कार का गौण काल निश्चित करते हैं।

इससे अधिक समय निकल जाने पर द्विज बालक पतित हो जाता है। पतित को उठाने के लिये विशेष प्रायश्चित की आवश्यकता होती है।

उपनयन की विशालता

उपनयन, यज्ञोपवीत और जनेऊ तीनों शब्द अलग अलग हैं; परन्तु तीनों शब्दो का अर्थ एक ही है। उप अर्थात् समीप, नयन अर्थात् प्राप्त करना या होना; उपनयन शब्द का अर्थ हो गया समीपता को प्राप्त करना।

संस्कार शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के सम् उपसर्ग 'कृञ्' धातु 'घञ्' प्रत्यय करके की गयी है। इसका प्रयोग कई अर्थों में किया जाता है। किन्तु यहाँ अभिप्राय धार्मिक क्रियाओं तथा व्यक्ति के वैदिक, मानसिक और बौद्धिक परिष्कार के लिये किये जाने वाले अनुष्ठानों में से है; जिससे वह समाज का पूर्ण विकसित सदस्य हो सके।

ब्राह्मण की मेखला मूँज की और क्षत्रिय की मेखला धनुष की प्रत्यञ्चा से बनी हुई (सूत की) तथा वैश्य की मेखला भेड़ के ऊन की बनी होती है।

जनेऊ कितने धारण करें

ब्रह्मचारी को एक, स्नातक हो जाने पर दो एवम् गृहस्थियों को भी दो याने जोड़ा धारण करना चाहिये। अंगोछा (दुपट्टा) पास में न हो तो तीन यज्ञोपवीत धारण करने का भी विधान है; परन्तु वर्तमान समय में ऐसा दिखाई नहीं देता है।

यज्ञोपवीत धारण करने का मंत्र मंत्र–खण्ड में लिखा जा चुका है।

जीर्ण यज्ञोपवीत बदलना

मल मूत्र त्यागते समय कान में टांकना भूल जाने पर, सूर्य और चन्द्र ग्रहण के उपरान्त, मृतक संस्कार में सम्मिलित होने के पश्चात् रजस्वलादि अस्पृश्यों के स्पर्श होने पर, प्रसूति स्नानोपरान्त, या यज्ञोपवीत खण्डित हो जावे तो स्नान करके यज्ञोपवीत बदलना चाहिये। प्रतिमास की पूर्णमा को या चार महीने पश्चात् तो बिना उपरोक्त कारणों के ही जनेऊ बदल लेना चाहिये। जीर्ण यज्ञोपवीत को शिर की ओर से निकलना शास्त्र सम्मत है। प्रायः देखने को मिलता है कि द्विज बन्धु जनेऊ के चाबी बांधते हैं; जो सर्वथा अनुचित है।

जीर्ण यज्ञोपवीत त्यागने का मंत्र, मंत्र–खण्ड में लिख दिया गया है।

जीर्ण यज्ञोपवीत को पीपल के चढ़ा दे, या कुए में डाल दे अथवा किसी तीर्थ स्थान के जल में छोड़दें।

यज्ञोपवीत का रंग

जनेऊ कपास से बनता है अतः सफेद है। श्वेत रंग सात्विकता का प्रतीक है। किन्तु गृहस्थी सात्विक नहीं हो सकते अतः जनेऊ को केसर या हल्दी से पीला रंग दिया जाता है। पीला रंग राजसिक (रजोगुणी) होता है। अतः गृहस्थी को पीत यज्ञोपवीत धारण करना शास्त्र समस्त है।

जनेऊ की लम्बाई

यज्ञोपवीत नाभी से नीचे न जाने पावे, इतनी लम्बाई होनी चाहिये वर्तमान में जनेऊ कमर से नीचे भी चली जावे तो कुछ भी दोष नहीं समझते केवल ९६ आंटे को ह मुख्य समझते हैं। अतः बनाने वाले अंगुलियों के ही ९६ आंटे लगाया करें न कि हाथ में या अंगुलियों को ढीली करके। क्योंकि 'स्मृतिरत्नाकर' में भी नाभि तक का ही जनेऊ धारण करने का विधान है।:—

स्तनाद्ध्वंय् अधो नाभेर्न कर्तव्यम् कथञ्चन ॥

जनेऊ निर्माण विधि :-

प्राचीन काल में जनेऊ, सण, कुशा, रेशम, कपास आदि की बनाई जाती थी परन्तु वर्तमान काल में कपास ही के बनाने की प्रथा है ।

ब्राह्मणी आदि के हाथ से काते हुए सूत को 'ॐ भूः' इस मन्त्र शे ९६ वार हाथ की अंगुलियों के चारों तरफ लपेट फिर 'ॐ भुवः' इस मंत्र से उसे दोलडा करें। 'ॐ स्वः' इस मंत्र से तीन लड़ा करें। पलाश पत्र पर उसे रखकर 'ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवः' इस मंत्र से धोवे। फिर बटकरके 'ॐ भूरग्नि०' मंत्र से तिलडा बटे। तदूनन्तर 'ॐ भूर्भुवः स्वश्द्र-मसम्०' मंत्र से तिलडा करके ग्रंथि देवें। पश्चात् ओंकार

आदि नवतंतु देवों का और ग्रन्थि देवो का मंत्र सहित आवाहन प्रतिष्ठा कर पूजन करें, फिर सूर्य को दिखाकर जनेऊ धारण करें ।

यज्ञ सूत्र में ९६ आंटे लेने का लेख है क्योंकि १५ तिथि ७ वार, २७ नक्षत्र, २५ तत्व, ४ वेद, ३ गुण, ३ काल, और १२ मास इन सब का योग होने से ९६ होते है।

कुछ विद्वानों का मत है कि चारों वेदों की माता गायत्री है और वह चौबीस अक्षरों वाली है, इस कारण चतुर्गुणी करने से ९६ होते है। इसलिये ९६ आंटे लेने का शास्त्र सम्मत विधान है ।

विप्रो वृक्षस्तस्य मूलम् च संध्या :—

इस वाक्य के अनुसार विप्र रूप पेड़ की जड़ प्रतिदिन संध्या करना है और वेदाध्ययन धर्म कर्मादि पत्ते माने गये हैं। अतः प्रतिदिन संध्या उपासना ब्राह्मण का ही नहीं द्विजजाति मात्र का मुख्य कर्तव्य कर्म है। तथा वह संध्या, बिना यज्ञोपवीत संस्कार के हो नहीं सकती। जनेऊ यज्ञकर्म तथा संध्यादि के हेतु है। अतः मेरा सभी द्विज बन्धुओं, खास तौर से विप्र बन्धुओं से निवेदन है कि वे उचित समय पर बालक का यज्ञोपवीत संस्कार करा कर बालक को यशस्वी, तेजस्वी और मेधा सम्पन्न बनावे तथा विप्रत्व की मर्यादा को निभावें ।

———

★ पूजन प्रकरण ★

अथ संकल्पः

ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीये प्रहरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वन्मन्वंरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे तत्रापि परमपुनीते भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे कुमारिकानामक्षेत्रे पुष्करारण्यसमीपे गंगायमुनयोः पश्चिमे तटे नर्मदाया उत्तरे तटे अमुकनाम्नि नगरे [ग्रामे वा] अमुक विक्रम संवत्सरे अमुकशालिवाहनशकाब्दे अमुकायने अमुकर्तौ अमुक मासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुक नक्षत्रे अमुक योगे करणे च अमुक राशिस्थिते सूर्ये अमुक राशिस्थिते चन्द्रे शेषेषु सर्वेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुक-

नामाहम् (अमुकनाम्नो यजमानस्य प्रतिनिधित्वेन वा) मम आत्मनः रोगदोषकष्ट पीड़ा निवारणार्थम् अलक्ष्मी निवारणार्थम् (त्याग करके पुनः जल लेके बोले) श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थ सपरिवारस्य मम (यजमानस्य वा) द्विपदचतुष्पदसहितस्य क्षेमाभयायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् समस्तमंगलावाप्त्यर्थम् भगवद्भक्ति वृद्ध्यर्थम् यथामिलितोपचारद्रव्यैः गणपति कुलदेवी नवग्रह—कलशस्थापनपूर्वकम् अमुक देवता—पूजनमहम् करिष्ये (यजमान गे लिए करे तो करिष्यामि बोलना चाहिए।

अथ गणपति पूजनम्

प्रथम गणपति (विनायक) पूजा का कारण :—

गणपति शब्द का भावार्थ गणानाम् पतिः, गणों का स्वामी गणपति माना गया है। यहाँ गण शब्द समूह का वाचक है यथा—

गण शब्दः समूहस्यवाचकः परिकीर्तितः।

अतः इसका आशय यह हुआ कि संगठनात्मक कई

रूपो के पालन करने वाले परमतत्व भगवान् गणपति ही हैं। इसलिए आदिदेव व आदि पूजा के अधिकारी है। अथवा–

महत्तत्वादि तत्व गणानाम् पतिः गणपतिः।

अर्थात महत् तत्व आदि के स्वामी को गणपति कहते है। इसके अतिरिक्त भगवती उमा से उत्पन्न होकर द्वार रक्षक बन कर जब भगवान शिव के अन्तःपुर प्रवेश को भी रोक दिया। फल स्वरुप युद्ध हुआ। युद्ध में शिवजी ने गणपति का मस्तक काट दिया भगवती पार्वती कुपित हुई। प्रलय की स्थिति सामने आ खड़ी हुयी। आखिर तुम्हारा पुत्र गणपति आदि देव एवम् आदि पूज्य माना जायगा। इस प्रकार पार्वती को भगवान् शंकर की ओर से वरदान दिया गया। इसी तरह निगुर्ण सगुण ब्रह्म के स्वामी को गणपति कहते हैं। तब से ही गणपति की पूजा सर्व प्रथम मानी जाती है। यही कारण है कि सभी मांगलिक कार्यो में विनायक अग्रपूज्य है।

सं० भास्करे–"आदौ विनायकः पूज्यश्चान्ते तु कुलदेवता"

भविष्य पुराणे च–"देवतादौयदा मोहाद्गणेशो न च पूज्यते। तदा पूजाफलम्हन्ति विघ्नराजो गणाधिपः"।

गणपति स्वरुप :– जैसा कि हम देखा करते है कि कहीं पर तो गणपति की पूजा सुपारी के मोली लगा कर की जाती है, कहीं पर स्वस्तिक बनाकर थाली में पूजा करते है तथा कहीं पर मिट्टी के बनाकर अथवा चित्र एवम् ॐ लिख कर पूजा करते हैं इस का भी एक मात्र कारण भगवान गणपति को सर्वमय मानकर उनका प्रतीक बनाकर स्थापना के साथ पूजा करना ही है। जो ऊपर लिखे हुये रूपों में शास्त्र सम्मत माना गया है।

–: पूजा विधान :–

हाथ में अक्षत (चावल)-पुष्प लेकर

आवाहन करें–ॐ शुक्लांबरधरंदेवम् शशिवर्णम् चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनम् ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥ अभीष्सितार्थसिद्धयर्थम् पूजितो यः सुरासुरैः। सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥

ॐ गणानान्त्वा गणपति ठ० हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ठ० हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिं ठ० हवामहे व्वसो मम। आहमजानिगर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः

सिद्धिबुद्धिसहित महागणाधिपतये नमः, गणपति-मावाहयामि स्थापयामि ।

यह कह कर गन्धाक्षत को भगवान् गणपति की मूर्ति पर भाव से छोड़ना चाहिए ।

मंत्रों के अर्थ :—श्वेत वस्त्रों को धारण करने वाले, चन्द्रमा के समान शुभ्रवर्ण वाले, चतुर्भुज, प्रसन्नमुख, सर्व विघ्ननाशक भगवान् गणपति का ध्यान करता हूँ ।

सम्पूर्ण मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाले देव राक्षसों से भी पूजित, सर्व विघ्न नाशक भगवान् गणपति को नमस्कार करता हूँ ।

मेरे धन श्री गणेशदेव ? गण के स्वामी ? तुम को बुलाते है । इन्द्र आदि देवों का प्रिय करने वाले तारकासुर को मारने में समर्थ तुमको बुलाते हैं, कार्तिकेय उनके विघ्नों नाश करने में समर्थ तुमको बुलाते है, निधियों के स्वामी तुमको बुलाते हैं । हे भगवान् गणपति ? आपने हमको पैदा किया है किन्तु आप अज है, गर्भ से उत्पन्न हुये नहीं हो । हम बुलाते हैं ।

अब यहाँ :—

॥ ॐ गं गणपतये नमः ॥

इस मन्त्र से षोड़शोपचार से पूजा करें ।

(१) आवाहनम् (२) आसन सम०

(३) पाद्यम् सम० (४) अर्घ्यम् सम०
(५) आचमनम् सम० (६) स्नानम् सम०
(७) वस्त्रम् सम० (८) यज्ञोपवीतम् सम०
(९) गन्धम् सम० (१०) पुष्पदूर्वाकुरम् सम०
(११) धूपम् सम० (१२) दीपम् सम०
(१३) नैवेद्यम् सम० (१४) आचमनीयम् सम०
(१५) ताम्बूलम् सम० (१६) सफल दक्षिणाम् सम० ॥

यथा—ॐ गं गणपतये नमः पादयो पाद्यम् समर्पयामि नमस्करोमि ।

इस प्रकार से प्रत्येक के साथ जो कि ऊपर संकेत कर दिया गया है बोलना चाहिये ।

–प्रार्थना–

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय,
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय,
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥

अनया पूजया श्री गणपतिः साङ्गः सपरिवारः प्रीयताम ।

ऐसा बोलकर हाथ में जल लेकर छोड़ दें ।

॥ इति गणपति पूजनम् ॥

–: अथ वरुणपूजा :–

देव पूजा करने के जल पात्र में वरुण देवता का आवाहन हाथ में अक्षत लेकर करें, यह मन्त्र बोले–

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यमसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद ॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृता ॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥
अंगैश्च सहिता सर्वे कलशम् तु समाश्रिताः ।
गायत्री चैव सावित्री शान्ति पुष्टिकरी तथाः ॥

आयान्तु देव पूजार्थम् दुरितक्षयकारकाः ॥
गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥

ॐ वरुणाय नमः । सर्वतीर्थेभ्यो नमः ॥
अस्मिन् जले सर्वतीर्थमयम् वरुमावाहयामि, स्थापयामि ।

यह बोल कर अक्षत छोड़े फिर षोड़शोपचार से पूजा करें ।

ॐ वरुणाय नमः आवाहनम्, आसनम्, पाद्यम्, अर्घ्यम्, स्नान, वस्त्रम्, गन्धम्, अक्षतान्, पुष्पम्, धूपम्, दीपम्, नैवेद्यम्, आचमनीयम्, ताम्बूलपत्रम्, पुंगीफलम्, दक्षिणाम्, समर्पयामि ।

फिर धेनुमुद्रा अंगुलियों की बनाकर कलश पर रखकर यह बोले ।

गंगासिन्धु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा ।
कावेरी सरयूर्महेन्द्रतनया चर्मण्वती वेदिका ॥
क्षिप्रावेत्रवती तथा सुरनदी ख्याता गया गल्लिका ।
पूर्णाः पूर्णतराः समुद्रसहिताः कुर्वन्तु नोमंगलम् ॥

फिर इस जल से सब पूजा की सामग्री के छींटा देवे, पश्चात् गणेश पूजन करें ।

–: अथ रक्षाविधानम् :–

सरसों अथवा अक्षतों को बायें हाथ में लेकर नीचे के मन्त्रों से रक्षा हेतु सब दिशाओं में फेंकता जाय ।

मन्त्र–पूर्वे रक्षतु गोविन्द, आग्नेय्याम् गरुड़ध्वज ।
याम्याम् रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैर्ऋते ॥
वारुण्याम केशवो रक्षेद् वायव्याम् मधुसूदनः ।
उत्तरे श्रीधरो रक्षेद् ईशाने तु जनार्दनः ॥
शंखो रक्षेच्च यज्ञाग्रे पृष्ठे खड्गस्तथैव च ।
वामपार्श्वे गदा रक्षेद् दक्षिणे तु सुदर्शनः ॥
ब्रह्माणम् माधवो रक्षेदाचार्य पातु वामनः ।
रक्षाहीनम् तु यत् स्थानम् तत्सर्वम् रक्षाताद्धरिः॥

अब दाहिने हाथ में अक्षत लेकर आगे श्लोकों से शिर पर घुमा कर बिखेर देवें ।

मन्त्र–अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

यदत्रसंस्थितम् भूतम् स्थानमाश्रित्य सर्वदा ।
स्थानम् त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थम् तत्र गच्छतु ॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।
सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे ॥

तत्पश्चात् मोली गणेशजी के सामने रख देवे । फिर उस मोली में से गणेशादि समस्त देवताओं को चढ़ा कर ब्राह्मण के यजमान रक्षा बन्धन करे क्योंकि ;–

सं० दीपके-पादाङ्गुष्ठं समारम्भ केशान्तं च नरर्षभ ।
रक्षासूत्रं प्रकर्तव्यं सर्वत्र शुभ कर्मणि ॥

रक्षा बन्धन के पश्चात् यजमान ब्राह्मण के तिलक करे । दोनों मंत्र मंत्र खण्ड में लिखे जा चुके हैं ।

फिर ब्राह्मण यजमान के रक्षा बन्धन कर तिलक करे । इसके भी दोनों मंत्र मंत्र खण्ड मे लिख दिये गये हैं ।

॥ इति रक्षा विधानम् ॥

(अथ स्वस्तिवाचनम् शान्ति पाठ)

ॐ आनोभद्राः क्रतवोप्यन्तुविश्वतो दब्धासो अपरीतासऽउद्भिदः । देवानो यथासदमित्वृधेऽअसन्न प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥ देवानां भद्रासुमतिर्ऋजूयतान्देवानां रातिरभिनोनिवर्त्तताम् । देवाना सख्यमुपसेदिमावयन्देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥ तान्पूर्वयानि विदाहूमहे वयं भगंमित्रमादितिन्द-क्षमस्विधम् ! अर्यमणम् वरुणं सोममश्विना सर-स्वतीनः शुभगा मयस्करत् ॥ तन्नोवातो मयोभुवातु भेशजन्तन्मातापृथिवी तत्पिता द्यौः । तद्ग्रावाणः सोमसुतोमयो भुवस्तदश्विना शृणुतन्धिष्ण्यायुवम् ॥ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियाञ्जन्वमवसे हूम-हेवयम् । पूषानो यधावेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाःस्व-स्तिनः पूषाविश्ववेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरि-ष्टनेमि, स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥

पृषदश्वामरुतः पृश्निमातरः शुभम्यावानोवृद्धमासो अग्निजिह्व मनवः सूरचक्षसो विश्वेनोदेवाऽअवसागमन्निह ॥ भद्रं कर्णेभिः शृणु-यामदेवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः । स्थिरैरङ्गै स्तु-ष्टुवा सस्तनुभिर्व्यशेमहि देवहितँ य्यदायुः ॥ शत-मिन्नु शरदोऽन्तिदेवा यत्रानश्चक्राजरसन्तनू-नाम् । पुत्रासोयत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारी-रिषतायुर्गन्तोः ॥ अदितद्यौरदितिरन्तरिक्षमदिति-र्म्माता सपिता सपुत्रः । विश्वेदेवाऽअदितिः पंच-जनाऽअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥ द्यौः शान्ति-रन्तरिक्ष शान्तिः । पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्ति सर्व शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥ यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयं कुरु । शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु ॥ सर्वारिष्टशान्ति-र्भवतु ॥ प्रारब्धकर्माणि निर्विघ्नतास्तु ॥

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।

लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥
शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णम् चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनम् ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थम् पूजितो यः सुरासुरैः ।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥
सर्वमंगलमांल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम् ।
येषाम् हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनम् हरिः ॥
तदेवलग्नम् सुदिनम् तदेव,
ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।
विद्याबलं दैवबलं तदेव,
लक्ष्मीपते तेंघ्रियुगं स्मरामि ॥
लाभस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।

येषामिन्दीवरश्यमो हृदयस्थो जनार्दनः ॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दना ॥
विनायकम् गुरुम् भानुम् ब्रह्माविष्णुमहेश्वरान् ।
सरस्वतीम् प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थसिद्धये ॥

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ॥
वाणीहिरण्यगर्भाभ्याम् नमः ॥ लक्ष्मीनारायणाभ्याम् नमः ॥ उमामहेश्वराभ्याम् नमः ॥ शचीपुरन्दराभ्याम् नमः ॥ मातृ पितृ चरण कमलेभ्यो नमः ॥ कुल देवताभ्यो नमः ॥ इष्टदेवताभ्यो नमः ॥ ग्रामदेवतभ्यो नमः ॥ स्थानदेवताभ्योनमः॥ वास्तु देवताभ्यो नमः ॥ सूर्यादिग्रहेभ्यो नमः ॥ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः ॥ एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः ॥

॥ इति शान्ति पाठमन्त्रा ॥

–: अथ लघु स्वस्तिवाचनम् :–

शान्तिरस्तु । पुष्टिरस्तु । तुष्टिरस्तु । वृद्धिरस्तु । अविघ्नमस्तु । आयुष्यमस्तु । शिवमस्तु । शिवकर्मास्तु । कर्मसमृद्धिरस्तु । धर्मसमृद्धिरस्तु । वेद समृद्धिरस्तु । शास्त्र समृद्धिरस्तु । पुत्रपौत्र समृद्धिरस्तु । धनधान्यसमृद्धिरस्तु ।

(अब भूमि पर त्याग करें)

अनिष्टनिरसनमस्तु । यत्पापम् रोगं अशुभम् अकल्याणम् तद्दूरे प्रतिहतमस्तु ।

(फिर हाथों पर जल के छींटे दें)

राजगृहे व्यापारे गृहे सुखशान्तिर्भवतु । श्रीरस्तु । कल्याणमस्तु । ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

॥ इति लघु स्वस्तिवाचनम् ॥

–: अथ कलश स्थापन :–

भूमि स्पर्श करें । मंत्र —

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री । पृथिवीम् यच्छ पृथिवींह ठं० ह पृथिवीम् माहि ठं० सी ।

कलश के नीचे स्थित जौ के हाथ लगावें । मंत्र–

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणायत्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा । दीर्घामनुप्रसिति मायुषे–धान्देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृब्भ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनाम् पयऽसि ।

फिर कलश स्थापित करे या कलश के हाथ लगावें । मंत्र–

ॐ अजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशंत्विन्दवः पुनरुर्जानिवर्त स्वसानः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मावित्तादियः ।

कलश में जल गेरने का मंत्र–

ॐ वरुणस्यो-तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भ

सर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋत-सदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद ।

कलश में चन्दन गेरने का मंत्र–

ॐ गन्धद्वाराम् दुराधर्षाम् नित्यपुष्टाम् करीषिणीम् ईश्वरीम् सर्वभूतानाम् तामिहोपह्वये श्रियम् ।

कलश में सर्वौषधी गेरने का मंत्र–

ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगम् पुरा । मनैनु बभ्रूणामहम् ठ० शतम् धामानि सप्त च ।

दूर्वा गेरने का मंत्र–

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती पुरुषः पुरुषस्परि । एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च ।

कुशा गेरने का मंत्र–

ॐ पवित्रो स्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसव उत्पुनामच्छिद्रे ण पवित्रोण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम् ।

सप्त मृत्ति का गेरने नंत्र–

ॐ स्योना पृथिवी न भवानृक्षरा निवेशनी

यच्छा नः शर्म सप्रथाः ।

पूंगीफल गेरने का मंत्र–

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः । बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चत्वम् ठ० हसः ।

पञ्चरत्न गेरने का मंत्र–

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् । दधद्रत्नानि दाशुषे ।

दक्षिणा गेरने का मंत्र–

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्नताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् । सादाधार पृथिवीम् द्यामुतोमाम् कस्मै देवाय हविषा विधेम ।

पञ्च पल्लव का मंत्र–

ॐ अश्वत्थेवो निषदनम् पर्णेवो वसतिष्कृता गोभाज इत्किलातथयत् सनवथ पुरुषम् ।

कलश के मोली बांधने का मंत्र–

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्सउश्रेयान् भवति जायमानः । तन्धीरासः कवय उन्नयन्ति

साध्यो मनसा देवयन्तः ।

पात्र में चांवल भरकर कलश पर पूर्ण पात्र रखने का मंत्र–

ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नेव विक्रीणा हाऽइषमूर्जम् शतक्रतो ।

नारियल के कुंकुम लगा कर मोली बांध कर कलश पर स्थापित करने का मन्त्र–

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रो पार्श्वे नक्षत्राणि रुपमश्विनौ व्याज्ञम् । इष्णन्निषाण मुम्मऽइषाणा सर्वलोकम्मऽइषाण ।

फिर कलश पर वरुण का पूजनकरें । मंत्र–

ॐ तत्वायामि ब्रह्मण वन्दमानस्तदास्ते यजमानो हविभिः । अहेडमानो वरुणेहवोध्युरुशम् ठ० समान आयुः प्रमोषीः ।

–: प्रार्थना :–

कलशस्य मुखे विष्णुः ग्रीवायाम् च महेश्वरः ।
मूले चैव स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥
कक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः ॥
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशम् तु समाश्रिताः ।
गायत्री चैव सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ॥
आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षयकारकाः ।
सर्वेसमुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ॥
आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षयकारकाः ।
देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ ॥
उत्पन्नोऽसि तथा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ।
स्वत्तः सर्वाणि तीर्थानिदेवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ॥
त्वायि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वम् च प्रजापतिः ॥
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपितृकाः ।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफल प्रदाः ॥
त्वत् प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलेश्वर ।
सान्निध्यम् कुरु देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥
तत्र सागम् सपरिवारम् वरुण स्थापयेत् पूजयेच्च ।

॥ इति कलश स्थापनम् ॥

* अथ मातृ का पूजन *

षोडशमातृ का पूजन के प्रमाण–

कात्ययन :–"कर्मादिषु च सर्वेषु मातरः सगणाधिपाः। पूजनीयाः प्रयत्नेन पूजिताः पूजयन्ति ताः" ॥

संग्रहे–"विना मातृकया यागम् ग्रहार्चाम् यो समारभेत्। कुप्यन्ति मातरः सर्वा ह्यशुभम् विन्दते फलम्" ॥

पूर्व और दक्षिण के बीच में अर्थात् अग्निकोण में लाल वस्त्र पर गेहूँ से जो सोलह कुड्डियों (भागों) से जो मण्डल बनाया हो उस पर अथवा थाली में स्वस्तिक (साठिये वाले गणपति स्थान) के दक्षिण भाग में त्रिशूल बना कर मातृ का पूजन करे।

आवाहन मंत्र :—

जयंती मंगला काली भद्राकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते॥
गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातर॥

धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।
गणेशनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश॥

चावलों को रक्त मंडल पर छोडते रहे—

(यजमान अपने बांये हाथ में चांवल लेकर दाहिने हाथ से नीचे लिखे प्रत्येक नाम से छोड़ता जाये) मंत्र—

"ॐ गौर्य्यै नमः" गोरीमावाहयामि, स्थापयामि।
"ॐ पद्मायै नमः" पद्मावाहयामि, स्थापयामि॥
"ॐ शच्यै नमः" शचीमावाहयामि, स्थापयामि।
"ॐ मेधायै नमः" मेधामावयामि, स्थापयामि॥
"ॐ सावित्र्यैनमः" सावित्रीमाहयामि स्थापयामि।
"ॐ विजयायैनमः", विजयामाहयामि, स्थापयामि
"ॐ जयायैनमः", जयामावाहयामि, स्थापयामि।
"ॐ देवसेनायै नमः", देवसेनामावाहयामि, स्थापयामि॥
"ॐ स्वधायैनमः" स्वधामावाहयामि, स्थापयामि।
"ॐ स्वाहायैनमः" स्वाहामावाहयामि, स्थापयामि॥
"ॐ मातृभ्योनमः" मातृरावाहयामि, स्थापयामि।
"ॐ लोकमातृभ्यो नमः", लोकमातृरावाहयामि, स्थापयामि॥

"ॐ धृत्यै नमः", धृतिमावाहयामि, स्थापयामि ।
"ॐ पुष्ट्यै नमः", पुष्टिमावाहयामि, स्थापयामि ॥
"ॐ तुष्ट्यै नमः", तुष्टिमावाहयामि, स्थापयामि ।
"ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः" आत्मनः कुल-देवतामावाहयामि, स्थापयामि ।
"ॐ गौर्य्यादिषोडशमातृभ्यो नमः" ॥

तदन्तर गुड़, घृत और नैवेद्य सहित षोडशोपचार से पूजा कर प्रार्थना करें । प्रार्थना—

जयंती मंगला काली भद्राकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ॥
अनया पूजया गौर्य्यादिषोडशमातरः प्रीयन्ताम्

ऐसा बोल कर जल छोड़ दें ।

विशेष पूजा में मंडल बनाया हो तो श्रीफल को मातृका को अर्पण करते हुये यह बोलें—

पत्रं पुष्पं फलं तोयं रत्नानि विविधानि च ।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं देहि में वांछितं फलम् ॥
रूपम् देहि जयं देहि भाग्यं भवति देहि मे ।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे ॥
फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यम् सचराचरम् ।

फलरयार्घप्रदानेन सफला सन्तु मनोरथाः ॥

(यह बोलकर श्रीफल भेट कर दें)

षोडशमातृका क्या हैं ?

ये षोडशमातृकायें देवपत्नियाँ हैं । यथा—

स्वामी देवता	देव पत्नी
भगवान् शिव	गौरी (उमा, पार्वती)
भगवान् विष्णु	पद्मा (लक्ष्मी, श्री)
भगवान् इन्द्र	शची (इन्द्राणी)
बुद्धिदेव	मेधा (प्रज्ञा)
,, ब्रह्मा	सावित्री
विजयप्रद देव	विजया
जय प्रद देव	जया
स्वामी कार्तिकेय	देवसेना
स्वामी अग्निदेव	स्वधा
,, अग्निदेव	स्वाहा
शेषदेव	मातायें
धृतिदेव	धृति (धैर्यकरी)
पुष्टिवर्धक देव	पुष्टि (पोषणकरी)
तुष्टि प्रद देव	तुष्टि (संतोषकरी)
लोकदे	लोक मातायें
कुलदेव	कुलदेवी

षोडशमातृकाओं की पूजा लाल कपड़े के मण्डल पर ही क्यों की जाती है ?

क्योंकि मातृकायें जितनी भी हैं वे रक्तवर्ण प्रधान हैं तथा तथा देव गण जितने भी है वे सब श्वेत वर्ण प्रधान हैं। अतः मातृका पूजा में रक्त वस्त्र तथा रक्त अन्न (गेहूँ) काम आते हैं।

॥ इति मातृका पूजनम् ॥

* अथ नवग्रह पूजनम् *

नवग्रह पूजा के विषय में शास्त्रीय प्रमाण—

उत्पल परिमले—"कार्यारम्भेषु सर्वेषु प्रतिष्ठास्वध्वरेषु च।

नववेश्म प्रवेशे च गर्भाधानादि कर्मसु।
आरोग्य स्नान समये संक्रान्तौ रोग संभवे॥
अभिचारे च यः कुर्याद् ग्रहपूजाम् विधानतः।
सोऽभीष्टफलमाप्नोति निर्विघ्नेन न संशयः"॥
देव दानव गन्धर्वाः यक्षराक्षस किन्नराः।

पीड्यन्ते ग्रहपीड़ाभिः किं पुनर्भुवि मानवाः॥
शनैश्चरेण सौदासो नरमांसे नियोजितः।
राहुणापीडितो राजा नलो भ्रान्तो महीतले॥
अंगारक विरोधेन रामो राष्ट्रात् विवासितः।
अष्टमेन शशांकेन हिरण्यकशिपुर्मृतः॥
रविणा सप्तमस्थेन रावणो विनिपातितः।
गुरुणा जन्म संस्थेन हतो राजा सुयोधनः॥
पाण्डवा बुध पीडायां विकर्मणि वियोजिताः।
षष्ठेनोभार्गवा युद्धे हिरण्याक्षौ निपातितः॥

पूजा विधि :—यजमान अपने बांये हाथ में चांवल लेकर दाहिने हाथ से सफेद मण्डल (जो श्वेत वस्त्र पर चांवलों के नौ समान भागों से वाम हस्त की तरफ बनाया है) पर अथवा थाली में नव बिन्दियां लगाकर बनाया हो, नीचे के मंत्रों से आवाहन कर प्रत्येक मन्त्र से नवग्रहों पर अक्षत छोड़े। मंत्र—

सूर्य-मण्डल मध्य में (गोलाकाकार, लाल)—

"ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्" ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ। सूर्याय नमः।

मन्त्रार्थ—भगवान् सूर्य सुवर्ण के रथ पर बैठ कर आते हैं। वे आते समय रात्रि के अंधकार को नष्ट करते रहते हैं। इसी तरह देवों को व मनुष्यों को अपने अपने स्थानों पर नियुक्त करते हुये चौदह लोकों को देखते हुये एवम् पाप पुण्य के साक्षी बनते हुये आते हैं अतः हे भास्कर देव! मेरे इस यज्ञ में पधारो तथा मेरी पूजा को ग्रहण करो। मै आपको नमस्कार करता हूँ।

चन्द्र-मण्डल अग्निकोण में (अर्ध चन्द्र, श्वेत)

"ॐ इमम् देवाऽअसपन्न ठ० सुवद्धम् महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते ज्जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएषवोमिराजा सोमोऽस्माकम्ब्राह्मणानां ठ० राजा"॥ ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ। चन्द्राय नमः।

मन्त्रार्थ :—सम्पूर्ण सूर्यादिदेवताओं ने इस चन्द्रमा को शत्रु रहित उत्पन्न किया। सम्पूर्ण लोकपालों के राजभाव के लिये, सर्वोत्तमता के लिए, जनों के अधिपति के लिए, आत्मा के ज्ञान सामर्थ्य के लिए, इस सूर्य के पुत्र को (सूर्य की किरणों से चन्द्रमा की वृद्धि होने से सूर्य का पुत्र कहाता है) पूर्व दिशा से उत्पन्न हुए तुम इस चन्द्रमा को शूरवीरता के

लिये ज्येष्ठता, राज्य और ऐश्वर्यादि के लिये अमुक पुत्र इसकी सेवा करो। यह चन्द्रमा हम ब्राह्मणों का राजा है। अतः हे देवताओं? इसके साथ सम्बन्ध करो व इसकी पूजा करो। हे चन्द्रदेव! मेरे इस यज्ञ में पधारो तथा मेरी पूजा को ग्रहण करो। मैं आपको नमस्कार करता हूँ।

मंगल-मण्डल दक्षिण मे (त्रिकोण, लाल)—

"ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽ अयम्। अपा ठ० रेता ठ० सिजिन्वति"॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भौम इहागच्छ इह तिष्ठ। भौमाय नमः।

मंत्रार्थ—हे अग्निस्वरुप वा अग्नितत्व मंगल देव? स्वर्ग आकाश में सूर्य रूप होकर मूर्धवति हो और ककुत् अर्थात् बड़े तेजस्वी हो इसके अतिरिक्त पृथ्वी के पुत्र हो। तुम ही जल बूंद रेतोत्पत्ति में कारण हो। हे भूमि सुत? मेरे इस यज्ञ में पधारो तथा मेरी पूजा को ग्रहण करो। मैं आपको नमस्कार करता हूँ।

बुध-मण्डल ईशान कोण में (हरा, धनुष)—

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्ते स ठ० सृजेथामञ्च। अस्मिम् त्सधस्थेऽध्युत्तरस्मिन्

विश्वेदेवा यजमाश्च सीदत" ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः बुध इहा गच्छ इह तिष्ठ । बुधाय नमः ।

मंत्रार्थ—हे बुध देव ? अग्निवत् प्रकाशमान आप प्रसन्न होकर आपकी प्रसन्नता से यह यजमान इष्ट मनोरथों को प्राप्त होवे और इस लोक में ऐश्वर्यादि भोग, उत्तरलोक में देवताओं के साथ निवास करे । यह प्रार्थना करते हैं । हे बुधदेव ? मेरे इस यज्ञ में पधारो तथा मेरी पूजा को ग्रहण करो । मै आपको नमस्कार करता हूँ ।

गुरु–मण्डल उत्तर में (पीला, अष्टदल)—

"ॐ बृहस्पतेऽअति यदर्य्योऽअर्हा द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्" ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः बृहस्पते इहागच्छ इह तिष्ठ । बृहस्पतये नमः ।

मंत्रार्थ—हे बृहस्पति देव ? अतिशय से धन, अर्थ स्वामिपना, योग्य पूजा यज्ञ करने वाले पुरुष में धारण करे और बल से जो रक्षा करने वाले तथा सत्य से है उत्पत्ति जिनकी या सत्य प्रजावाले पुरुष को अनेक प्रकार का धन देवो ऐसी प्रार्थना हम करते हैं । हे बृहस्पति देव ! मेरे इस यज्ञ में पधारो तथा मेरी पूजा को ग्रहण करो । मैं आपको नमस्कार करता हूँ ।

शुक्र-मण्डल पूर्व में (श्वेत, पंचकोण)—

"ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसम् ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रम्पयः सोमम् प्रजापतिः । ऋतेन सत्यमिन्द्रियम् विपान ठं० शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोऽमृतम्मधु ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्र इहा गच्छ इह तिष्ठ । शुक्राय नमः ।

मंत्रार्थ—हवि लक्षण रुप अन्न का परिस्रुत रस मयी लक्षण ब्रह्म से व्याप्त और क्षत्र से व्याप्त सोम प्रजापति संबन्धी पय इस सत्य से युक्त इन्द्र इन्द्रिय अन्न को यह शुक्र के सम्बन्ध से युक्त सम्बन्ध हो, यह प्रार्थना करते हैं । हे भृगु देव ? मेरे इस यज्ञ में पधारो तथा मेरी पूजा को ग्रहण कीजिये । मैं नमस्कार करता हूँ ।

शनि-मण्डल पश्चिम में (काला, मनुष्य)—

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये । शंयोरभिस्रवन्तु नः" ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शनैश्चर इहा गच्छ इह तिष्ठ । शनैश्चराय नमः ।

मंत्रार्थ—सुख रुप हमारे कल्याणकारक देव स्वरूप, रोग के विनाश के लिये भय दूर करने के लिए शनि देव की स्तुति व प्रार्थना करते हैं । हे शनि देव ? मेरे इस यज्ञ में पधारो

तथा मेरी पूजा को ग्रहण करो। मैं आपको नमस्कार करता हूँ।

राहु–मण्डल नैऋत्य में (काला, मकर)

"ॐ कया नश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता" ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः राहो इहा गच्छ इह तिष्ठ। राहवे नमः।

मंत्रार्थ—हे राहु देव ? किस आगमन से आप हमारे को आनन्द करते हैं और किससे हमारे को धन देते हैं। हम वही उपाय करें। हे राहु देव ? मेरे इस यज्ञ में पधारो तथा मेरी पूजा को ग्रहण करो मै आपको नमस्कार करता हूँ।

केतु मण्डल वायव्य में (काली, ध्वजा)—

"ॐ केतुम् कृण्वन्न केतवे पेशो मर्य्याऽअपेश से। समुषद् भिरजा यथाः" ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः केतो इहागच्छ इह तिष्ठ। केतवे नमः।

मंत्रार्थ–हे केतु देव ? आप ध्वजा रुप हो प्रत्येक मनुष्य को ज्ञान देते हो। जो मनुष्य अज्ञान से युक्त अथवा दरिद्री है उनको ज्ञान और धन देते हो। हे केतु देव ? मेरे इस यज्ञ में पधारो तथा मेरी पूजा को ग्रहण करो। मैं आपको नमस्कार करता हूँ।

"ॐ सूर्य्यादि ग्रहेभ्यो नमः" ॥

पाद्यादि षोडशोपचार पूजन कर प्रार्थना करें:–

—प्रार्थना—

ॐ ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी,
भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहु केतवेः,
सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ॥
अनया पूजया सूर्य्यादि ग्रहाः प्रीयताम् ॥

मंत्रार्थ—भगवान् ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु एवम् केतु हमारा मंगल करें।

अन्त में जल छोड़ना चाहिये।

॥ इति नवग्रह पूजनम् ॥

सर्व देव विसर्जन मंत्र –

यान्तु देवगणाः सर्वे विना लक्ष्मी विनायकौ।
इष्टकाम समृद्ध्यर्थम् पुनरागमनाय च ॥

★ मिश्रित-प्रकरण ★

* श्रीराम स्तुति *

सुग्रीव-मित्रं परमं पवित्रं, सीता-कलत्रं
नव मेघ-गात्रं ।
कारुण्यपात्रं शतपत्रनेत्रं, श्रीरामचन्द्रं
सततं नमामि ॥
संसारसारं निगमप्रचारं, धर्मावतारं
हृत-भूमिभारम् ।
सदाविकारं सुखसिंधुसारं, श्रीरामन्द्रं
सततं नमामि ॥
लक्ष्मीविलासं जगतां निवासं, लंकाविनाशं
भुवन–प्रकाशं ।
भक्ताधिवासं शरदिन्दुहासं, गुणैर्विशालं
हतसप्ततालाम् ॥
क्रव्यादकालं सुरलोकपालं, श्रीरामचन्द्र
सततं नमामि ।

वेदान्तगानं सकलैः समानं, हतारिमानं
त्रिदशप्रधानम् ॥
गजेन्द्रयानं विगतावसानं, श्रीरामचन्द्रं
सततं नमामि ।
श्यामभिरामं नयनाभिरामं, गुणाभिरामं
वचनाभिरामम् ॥
विश्वप्रमाणं कृतभक्तकामं, श्रीरामचन्द्रं
सततं नमामि ।
लीलाशरीरं रणरंगधीरं, विश्वैकसारं
रघुवंशहारम् ॥
गंभीरनादं जितसर्ववादं, श्रीरामचन्द्रं
सततं नमामि ॥
बालेः कृतान्तं स्वजनेविनीतं, सामोपगीतं
मनसाप्रतीतम् ।
रागेण गीतं कवनादतीतं, श्रीरामचन्द्रं
सततं नमामि ॥

रामायण सारः (एक श्लोकी रामायण)

आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगम् कांचनम्

वैदेही हरणं जटायुमरणं सुग्रीव सम्भाषणम् ।
बाली निग्रहणं समुद्रतरणं लंकापुरी दाहनम्
पश्चात् रावण कुम्भकर्णहननं एतद्धि रामायणम् ॥

भागवत सारः (एक श्लोकी भागवत)

आदौ देवकी देवगर्भ जननम् गोपी गृहे वर्धनम्
माया पूतन जीवताप हरणम् गोवर्धनो धारण ।
कंसच्छेदन कौरवादिहननम् कुन्तीसुतापालनम्
एतत् श्रीमद् भागवत पुराण कथितं श्रीकृष्ण
लीलामृतम् ॥

* गीता सारः *

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकम् शरणम् व्रज ।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच ॥
अनन्याश्चिंतयंतो माम् ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानाम् योगक्षेम वहाम्यहम् ॥

॥ श्री हनुमान स्तुति ॥

मनोजवं मारुत तुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धि मतां वरिष्ठम् ।
वातात्मज वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ॥

उल्लंघ्य सिन्धोः सलीलं सलीलं यः शोकवह्नि
जनकात्मजायाः ।
आदाय तेनैव ददाह लंका नमामि तम्
प्रांजलिराञ्जनेयम् ॥

* अन्नपूर्णा स्तुति *

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्कर प्राण वल्लभे ।
ज्ञान-वैराग्य सिद्धियर्थं भिक्षादेहि च पार्वती ॥

* पीपल स्तुति *

अश्वत्थ हुतभुग्वास गोविन्दस्य सदाप्रिय ।
अशेषम् हर मे पापं वृक्षराज नमोस्तु ते ॥

* तुलसी स्तुति *

देवैस्त्वम् निर्मिता पूर्वमर्चितासि मुनीश्वरैः ।
नमो नमस्ते तुलसि पाप हर हरि प्रिये ॥

* भगव विष्णु–ध्यान *

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्,
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णम् शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकांतं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्,
वन्दे विष्णुम् भवभयहरम् सर्वलोकैकनाथम् ॥

यं ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति,
परम प्रधानम् पुरुषम् तथाऽन्ये ।
विश्वोद्गते कारणमीश्वरम् वा,
तस्मै नमोः विघ्नविनाशनाय ॥

* भगवान् शिव–ध्यान *

ॐ कपूर गौरम् करुणावतारम्
संसार सारम् भुजगेंद्रहारम् ।
सदा वसन्तम् हृदयारविन्दे,
भवम् भवानी सहितम् नमामि ॥
मन्दार माला कलितालकायै,
कपाल माजङ्किा कन्धराय ।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय,
नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥
अखण्डानन्द बोधाय,
शोक सन्तापहारिणे ।
सच्चिदानन्द रूपाय,
शंकराय नमो नमः ॥

* व्याधि रहित पूर्णायु–मंत्र *

पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः ।
पुण्यश्लोको च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः ॥
अश्वत्थामा बलिव्यांसो हनुमांश्च विभीषणः ।
कृपः परशुराश्च सप्तैते चिरजीविनः ॥
सप्तैतान्संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम् ।
जीवेद्वर्षशतं सोऽपि सर्वव्याधि विवर्जितः ॥

* महापातक नाश मंत्र *

अहल्या द्रौपदी सीता तारा मन्दोदरी तथा ।
पंचकं ना स्मरेन्नित्यं महापातक नाशनम् ॥

*दुःस्वप्न व अपशकुन नाश मंत्र *

अविमुक्तचरणयुगलं दक्षिणमूर्त्तेश्च कुक्कुटचतुष्कम् ।
स्मरणमपि वाराणस्या निहन्ति दुःस्वप्नमपशकुनम् ॥

* सौभाग्य वर्धक मन्त्र *

उमा उषा च वैदेही रमा गङ्गेति पञ्चकम् ।
प्रातरेव स्मरेन्नित्यं सौभाग्यं वर्धते सदा ॥

* व्याधि से मुक्ति–मन्त्र *

सोमनाथो वैद्यनाथो धन्वन्तरिरथाश्विनौ ।
पञ्चैतान्स्मरतो नित्यम् व्याधिस्तस्यन विद्यते ॥

* विष बाधा से मुक्ति मन्त्र *

कपिला कालियोऽनंतो वासुकिस्तक्षकस्तथा ।
पञ्चैतान्स्मरतो नित्यं विषबाधा न जायते ॥

* घोर संकट से मुक्ति–मन्त्र *

हरं हरिम् हरिश्चन्द्रं हनुमन्तं हलायुधम् ।
पञ्चकं वै स्मरेन्नित्यं घोरसंकट नाशनम् ॥

* भव बाधा से मुक्ति–मन्त्र *

रामं स्कन्दं हनूमन्तं वैनतेयं वृकोदरम् ।
पञ्चैतान्संस्मरेन्नित्यं भव बाधा विनश्यति ॥

* क्षुधा बाधा से मुक्ति–मन्त्र *

आदित्यश्च उपेंद्रश्च चक्रपाणिर्महेश्वरः ।
दण्डपाणिः प्रतापी स्यात्क्षुत्तृड्बाधा न जायते ॥

* तृषा बाधा से मुक्ति–मन्त्र *

वसुर्वरुणसोमौ च सरस्वती च सागरः ।

पञ्चैतान्संस्मरेद्यत्र तृषा तत्र न बाधते ॥

* काम बाधा बाधा से मुक्ति–मन्त्र *

सनत्कुमारदेवर्षिशक्रभीष्मप्लक्षजाः ।
पञ्चैतान्स्मरतो नित्यं कामस्तस्य न बाधते ॥

* महा बाधा से मुक्ति–मन्त्र *

रामलक्ष्मणौ सीता च सुग्रीवो हनुमान्कपिः ।
पञ्चैतान्स्मरतो नित्यं महा बाधा प्रमुच्यते ॥

★ अर्थ लाभ और विजय प्रद–मन्त्र ★

वैन्यम् पृथुम् हैहयमर्जुनम् च,
शाकुन्तलेयम् भरतम् नलम् च ।
रामम् च सीताम् स्मरति प्रभाते,
तस्यार्थलाभो विजयश्च नित्यम् ॥

★ नेत्र रोग से मुक्ति–मन्त्र ★

शर्य्यातिम् च सुकन्यांञ्च,
च्यवनम् शक्रम् अश्विनौ ।
एतेषाम् स्मरण मात्रेण,
नेत्र रोगान प्रणश्यति ॥

★ भोजन पाचन शक्ति-मन्त्र ★

अगस्त्यम् कुम्भकरणम् च ,
शमिचम् वड़वानलम् ।
भोजनम् पचनार्थाय स्मरेत्,
भीम च पञ्चकम् ॥

॥ इति शुभम्

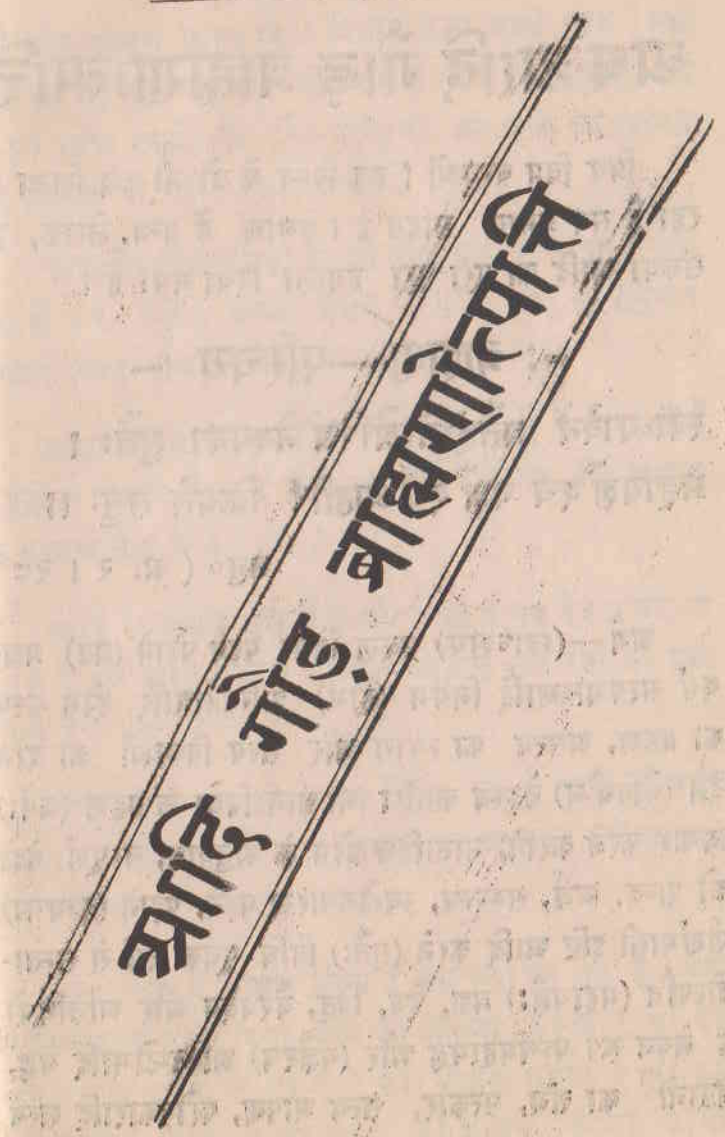

अथ आदि गौड़ ब्राह्मणोत्पत्ति

प्रिय विप्र बन्धुओं ! इस विषय में जो भी कुछ लिखा जा रहा है सब प्रमाण सहित है। प्रमाण में ग्रन्थ, लेखक, पृष्ठ संख्या आदि का पूरा पूरा हवाला दिया गया है।

-: ब्राह्मण—परिचय :-

स्वाध्यायेन व्रतैर्होमैस्त्रैविद्येनेज्यया सुतैः।
महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः॥

मनु० (अ. २। २८)

अर्थ—(स्वाध्याय) सकल विद्या पढ़ने पढ़ाने (व्रत) ब्रह्मचर्य सत्यभाषणादि नियम (होम) अग्निहोत्रादि होम सत्य का ग्रहण, असत्य का त्याग और सत्य विद्याओं का दान देने (त्रैविद्येन) वेदस्थ कर्मोपासना ज्ञान विद्या के ग्रहण (जपैः) विचार करने कराने, नानाविध होम के अनुष्ठान, सम्पूर्ण वेदों को शब्द, अर्थ, सम्बन्ध, स्वरोच्चारण पढ़ने, पढ़ाने (इज्यया) पौर्णमासी इष्टि आदि करने (सुतैः) विधि पूर्वक धर्म से सन्तानोत्पत्ति (महायज्ञैः) ब्रह्म, देव, पितृ, वैश्वदेव और अतिथियों के सेवन रूप पञ्चमहायज्ञ और (यज्ञैश्च) अग्निष्टोमादि यज्ञ, विद्वानों का संग, सत्कार, सत्य भाषण, परोपकारादि सत्य

कर्म और सम्पूर्ण शिल्प विद्या विज्ञान कला आदि पढ़के [यज्ञों के सेवन से] दुष्टाचार छोड़ श्रेष्ठाचार में वर्त्तने से (इयम्) यह (तनुः) शरीर (ब्रह्मी) वेद और परमेश्वर की भक्ति का आधार रूप ब्राह्मण का शरीर किया जाता है।

'ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तण्ड' के परिभाषा प्रकरण के पृष्ठ संख्या ४८ से ५२ (श्लोक संख्या ३४३ से ३६८ तक) के अनुसार ब्राह्मण विषय सम्बन्धी प्रश्न व उत्तर :—

ब्राह्मणमहिमा—पृथ्वी में जितने तीर्थ हैं वे सब तीर्थ समुद्रों में मिलते हैं समुद्र में जितने तीर्थ हैं वे सब तीर्थ ब्राह्मण के दक्षिण पाद में है। ४३।

चारों वेद उसके मुख में हैं और अंग में सब देवता आश्रय करते है इस वास्ते ब्राह्मण की पूजा करने से सब देवों की पूजा होती है। ४४।

पृथ्वी में ब्राह्मण जो है वह विष्णु रूप हैं इससे जिसको कल्याण की इच्छा होवे उसने ब्राह्मणों का अपमान नहीं करना, द्वेष नहीं करना चाहिए। ४५।

चार वर्णों में ब्राह्मण मुख्य है सब वर्णों का गुरु है। अब ब्राह्मण नाम करके क्या जीव को ब्राह्मण कहना १ या देह को ब्राह्मण कहना २ या रंगों को ब्राह्मण कहना ३ या कर्म को ब्राह्मण कहना ४ या जाति को ब्राह्मण कहना ५ या

पांडित्य को ब्राह्मण कहना ६ या धर्म को ब्राह्मण कहना ७ क्या धार्मिक्य को ब्राह्मण कहना ८ ऐसे आठ विकल्प हैं। तब कौन से विकल्प से ब्राह्मण कहना सो कहो अब पहिले जीव को जो ब्राह्मण कहना तब सब लोक प्राणिमात्र का जीव एक रूप है इससे जीव मात्र ब्राह्मण नहीं होता है। ४६।

अब देह को जो ब्राह्मण कहना तो चांडाल पर्यन्त मनुष्यों के देह का जरामरण देख पडता है और देह को ब्राह्मण कहना तो मरणांत को मातादिक के देह को दहन करने से पुत्रादिकों को ब्रह्म हत्यादि दोष होवे इससे देह ब्राह्मण नहीं होता है। ४७।

अब रंग से जो ब्राह्मण कहना तो ब्राह्मण का श्वेत वर्ण क्षत्रिय का रक्त वर्ण, वैश्य का पीत वर्ण, शूद्र का कृष्ण वर्ण ऐसा शास्त्र निश्चय है। परन्तु वर्तमान में शूद्रादिक श्वेत वर्ण है और ब्राह्मण कृष्णादिक वर्ण है इससे (रंगसे) ब्राह्मण नहीं होता है। ४८।

अब कर्म से ब्राह्मण कहना तो ब्राह्मण शतवर्षायु, क्षत्रिय का पचास वर्ष वैश्य पचीस और शूद्र का बारह वर्ष ऐसा नियम है परन्तु यह निश्चय इस समय में नहीं है इससे आयुष्यरूप कर्म से ब्राह्मण नहीं होता है। ४९।

अब जाति से जो ब्राह्मण कहना तो अन्य जाति में उत्पन्न हुये बहुत ऋषीश्वर हैं ऋष्यशृंग ऋषि हरिणी से पैदा भये, कौशिक ऋषि दर्भ के गुच्छे से पैदा भये, वसिष्ठ ऋषि वेश्या

से, वेद व्यास कैवर्त कन्या से, भारद्वाज ऋषि शूद्री से, विश्वामित्र क्षत्रिया स्त्री से, नारद दासी पुत्र ऐसे पुराणों में प्रसिद्ध हैं। इनकी ब्राह्मण जाति में उत्पत्ति नहीं है तथापि उत्तम ज्ञान के लिये और कर्म प्राबल्य से अत्यंत ब्राह्मणता को पाये हैं इस वास्ते केवल जाति से ब्राह्मण नहीं होते हैं। ३।९।

अब पंडितता से जो ब्राह्मण होवे तो क्षत्रिय वैश्य शूद्रादिक पद पदार्थ वाक्य प्रमाण के जानने वाले बहुत हैं। इस वास्ते पंडितपने से ब्राह्मण नहीं होता है। ५१।

अब धर्म ब्राह्मण होता होवे तो क्षत्रिय वैश्य शूद्रादिक यज्ञ (याग) वापी, कूप, तडागारामादिक धर्म बहुत करवाते हैं इससे धर्म से ब्राह्मण नहीं होता है। ।५२।

अब धार्मिक ब्राह्मण होता होवे तो अन्य वर्ण भी कन्यादान, गोदान, भूमिदान, सुवर्ण दानादिक बहुत दान देने वाले हैं इससे धार्मिक ब्राह्मण नहीं होते हैं। ५३।

तब ब्राह्मण कौन होता है सो कहते हैं, जो पहले ब्राह्मण जाति में जन्म लेके वेदोक्त संस्कार युक्त हो के स्वकर्म करता होवे शम दम आदि गुण युक्त, काम क्रोध लोभ मोह मात्सर्य तृष्णा इषा हिंसा निर्दयता आदि से रहित होके जो वेद वेदार्थ जानने उपनिषत्प्रतिपाद्य ब्रह्म को जाने नित्य उसका मनन

करे सो ब्राह्मण [ब्रह्म को जानने वाला] दूसरा नहीं होता है। ५४।

और ब्राह्मण जो है वह वृक्षरूप है वे वृक्ष का मूल संध्या है चार वेद उसकी शाखा हैं, धर्म कर्म उसके पत्ते हैं मोक्ष उसका फल है इस वास्ते बड़े प्रयत्न से मूल रक्षण करना मूलनाश पाया तो शाखा, पत्ते, फल सबों की प्राप्ति कहां से होगी इस वास्ते ब्राह्मण ने त्रिकाल संध्या अवश्य करना है। ५५।

श्लोक संख्या ३५६, ५७, ५८ में ब्राह्मण और बनिये के नाम है।

कौन कौन ब्राह्मण और क्या क्या लक्षण सो कहो।५९।

उत्तम एक सत्य ब्रह्म एक तप ब्रह्म, एक इंद्रियजय ब्रह्म, एक सर्व भूतदया ब्रह्म यह चार पदार्थ जिसने पैदा किये वह ब्राह्मण का लक्षण पूर्ण जानना। ६०।

शूद्र होके शील गुण सम्पन्न होवे तो ब्राह्मणों को वह मान्य है और ब्राह्मण स्वकर्मभ्रष्ट है तो शूद्र से भी अधम होता है।। ६१।

सब जाति में ब्राह्मण और सब जाति में चांडाल है। ब्राह्मणों में भी कर्मयोग से चांडाल हैं। चांडालों भी कर्मयोग से ब्राह्मण हैं। ६२।

इस वास्ते ब्राह्मण ने अपना स्वधर्म पालन करना, स्वधर्म बिना नाम धारक जानना। ६३।

जिस ग्राम में दुराचारी अधर्मी ब्राह्मण भिक्षा लेके निर्वाह करते हैं वह ग्राम चोर लोक को आश्रय देने वाला है। इस लिए राजा द्वारा उन भिक्षा लेने वाले ब्राह्मणों को दण्ड देना योग्य है।

मूर्ख ब्राह्मण शूद्र सरीखासब कर्म में अयोग्य है। जैसा शूद्र वैसा मूर्ख ब्राह्मण जानना। वह ब्राह्मण पूजा करने और दान देने में योग्य नहीं है। कोई अड़चन के समय में खेती करने वाले को ब्राह्मण करलेना परन्तु वेद मंत्र रहित ब्राह्मण का त्याग करना। पिता का श्राद्ध में धर्म का चट (कुशनिर्मित ब्राह्मणो रखके बिना ब्राह्मण के करना योग्य है। परन्तु मूर्ख ब्राह्मण को श्राद्ध में कभी न बुलावें। मूर्ख ब्राह्मण जो दान देना सो आहार परिमित अन्नमात्र दान देना। दूसरे दान कुछ देना नहीं देने से नरक प्राप्त होवेगा। और जो श्राद्ध का अन्न मूर्ख ब्राह्मण के उदर में गया तो वे पितृगण नरक में पड़ते हैं।

'मनुस्मृति' १। ८८। के अनुसार ब्राह्मण के लक्षण— निष्कपट होके प्रीति से पुरुष पुरुषों को और स्त्री स्त्रियों को पढ़ावे (२) पूर्ण विद्या पढ़े (३) अग्नि होत्रादि यज्ञ करें (४) यज्ञ करावें (५) विद्या तथा सुवर्ण आदि का सुपात्रों क

दान देवे (६) न्याय से धन उपार्जन करने वाले गृहस्थों से दान लेवें भी।

'श्री मद् भगवत् गीता' अ० १८। ४२ ॥ के अनुसार ब्राह्मण के लक्षण—(शम) मन से बुरे काम की इच्छा भी न करनी और उसको अधर्म में कभी प्रवृत न होने देना (दमः) श्रोत्र और चक्षु आदि इन्द्रियों को अन्यायाचरण से रोक कर धर्म में चलाना (तपः) सदा ब्रह्मचारी जितेन्द्रिय होके धर्मानुष्ठान करना (शौचम्) राग द्वेश मोहादि से मन और आत्मा को तथा जलादि से शरीर को सदा पवित्र रखना (क्षान्ति) निन्दा स्तुति सुख दुःख शीत उष्ण क्षुधा तृषा हानि लाभ मान अपमान आदि हर्ष शोक छोड़ के धर्म में दृढ़ निश्चय रहना (आर्जव) कोमलता, निराभिमान, सरलता, सरल स्वभाव रखना कुटिलता आदि दोष छोड़ देना ज्ञान सब वेदादि शास्त्रों को सांगोपांग पढ़ के पढ़ाने का सामर्थ्य विवेक, सत्य का निर्णय जो वस्तु जैसी हो अर्थात् जड़ को जड़ चेतन को चेतन जानना और मानना [विज्ञान] पृथिवी से लेके परमेश्वर पर्यंत पदार्थों को विशेषता से जानकर उनसे यथा योग्य उपयोग लेना [आस्तिक्य] कभी वेद, ईश्वर मुक्ति, पूर्व जन्म, पर जन्म, धर्म विद्या, सत्संग, माता, पिता, आचार्य और अतिथियों की सेवा को न छोड़ना और निन्दा कभी न करना।

आदि गौड़ ब्राह्मणों की उत्पत्ति

प्रथम सृष्टि के आरम्भ में सब मनुष्यों की एक ही जाति मानी जाती थी यह वह समय था जब कि अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा द्वारा क्रम से ऋक्, यजु, साम और अथर्व वेद रचे जा रहे थे अर्थात् अग्नि ऋषि ने ऋग्वेद, वायु ऋषि ने यजुर्वेद, आदित्य ऋषि ने सामवेद और अंगिरा ऋषि ने अथर्ववेद की रचना की। इसके उपरान्त ऋषियों ने यजुर्वेद के ३१ वें अध्याय के ११ वें मन्त्र के अनुसार वर्ण व्यवस्था बनाई :—

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्,
बाहू राजन्य कृत।
ऊरुतदस्यद्वैश्य पद्भ्यां,
ठ० शूद्रो अजायत ॥

व्याख्या :—जिन मनुष्यों का कर्म मुख से उत्पन्न देखा गया अर्थात् वेदों का सांगोपांग पढ़ने पढ़ाने वाले ज्ञान वान वैज्ञानिक पदार्थ विद्या को जानने वाले मनुष्यों का ब्राह्मण वर्ण ठहराया, तथा बाहू से उत्पन्न कर्म वाले अर्थात् विद्वान बलवान् दुष्टों का ताडन और श्रेष्ठों का सत्कार करने के स्वभाव वाले न्यायकारी प्रजा पाल देखे गये वे क्षत्रिय ठहराये, और ऊरु के बल से उत्पन्न कर्म वाले अर्थात् व्यापार विद्या को

जानने वाले कृषि कार्य तथा पशु पालन करने वालेवैश्य माने गये, और पगों से उत्पन्न कर्म दासत्वपन से निर्वाह करने वाले मूर्ख शूद्र निश्चय किये गये।

इस समय वर्ण परीक्षा में उत्तीर्ण होते थे इसलिये परिवर्तन भी हो जाते थे वर्णों की उपाधि कर्मों पर निर्भर थी ऐसा समय करोड़ों वर्ष बना रहा था। इस समय के ब्राह्मणों में आज कल की भांति भेद नहीं था सब की भाषा संस्कृत थी इसके व्याकरण को बहुत ऊंचे पद पर पहुँचा दिया था इस समय का व्याकरण अष्टाध्यायी है जो पाणिनि मुनि ने रचा हैं। इसी समय में छः दर्शन बने थे जिन्हें छः शास्त्र भी कहते हैं।

—छः शास्त्रों का बनना—

पहले शास्त्र 'न्याय दर्शन' जिसको गौतम ऋषि ने बनाया था, इसमे प्रमाण वाद ही पर विचार किया गया था और प्रमेय के सिद्ध करने के लिये जो प्रमाण आवश्यकीय हैं और जिन साधनों से विचार करने की आवश्यकता होती है और जिन कारणों से विचार में त्रुटि आ जाती है और जिन कारणों से ज्ञात हो जाता है कि विचार पूरा हो गया उसकी व्याख्या की गई और यह भी सूचित कर दिया गया कि मनुष्य जीवन का उसके मुख्य उद्देश्य पर पहुँचना, बिना इन वस्तुओं के ज्ञान के असंभव है और इसके निमित्त ऋषि गौतम ने १६ पदार्थों का ज्ञान आवश्यकीय समझा था (१) प्रमाण

(२) प्रमेय (३) संशय (४) प्रयोजन (५) दृष्टान्त (६) सिद्धान्त (७) अवयव (८) तर्क (९) निर्णय (१०) वाद (११) जल्प (१२) विवंडा (१३) हेत्वाभास (१४) छल (१५) जाति (१६) निग्रहस्थान। इस प्रकार से ऋषि गौतन ने प्रमाण वाद को को स्पष्ट कर दिया था।

इसके पश्चात् कणाद मुनि हुये इनके बनाये हुये शास्त्र का नाम "वैशेषिकदर्शन" है इन्होंने प्रमेय वस्तुओं का साधर्म्य और वैधर्म्य बतलाने के निमित्त ही इस शास्त्र को बनाया था इस दर्शन में कणाद जी ने प्रमेय को छः भागो में विभक्त कर दिया था—(१) द्रव्य (२) गुण (३) कर्म (४) सामान्य (५) विशेष (६) सम्बाय। अब उन्होंने द्रव्यों में ९ पदार्थ लिये अर्थात [१] पृथ्वी [२] जल [३] तेज [४] वायु [५] आकाश [६] काल [७] दिशा [८] मन [९] आत्मा अर्थात् जीवआत्मा व परमात्मा। इसी प्रकार २४ गुण बतलाये [१] रूप [२] रस [३] गन्ध [४] स्पर्श [५] संख्या [६] परिमान [७] पृथकत्व [८] संयोग [९] विभाग [१०] प्रत्व [११] बुद्धि[१२] अप्रत्य [१३] सुख [१४] दुःख [१५] इच्छा [१६] द्वेष [१७] प्रयत्न [१८] गुरुत्व (१९) द्रवत्व (२०) स्नेह (२१) संस्सकार (२२) धर्म (२३) अधर्म (२४) शब्द इसी प्रकार ५ तरह के कर्म बतलाये (१) उत्क्षेपण (२) अवक्षेपण (३) आकुंचन (४) प्रसारण (५) गमन और

सामान्य विशेषादि बता कर बड़ी योग्यता से प्रमेय वाद की व्याख्या करदी थी।

इसके पश्चात् महात्मा कपिल ऋषि हुये थे जिन्होंने तीसरा शास्त्र बनाया जिस का नाम "सांख्यदर्शन" है। कपिल जी ने कहा था कि प्रमाण और प्रमेय का ज्ञान तो हो गया परन्तु गंभीर विचारों में प्रत्येक पुरुष कृतार्थ नहीं हो सकता अतः दुःख और सुख जो दो गुण हैं उनके आधार की खोज करनी चाहिए जिससे तीन प्रकार के दुःखों की निवृति हो जावे। जब उन्होंने देखा कि संसार में दो प्रकार के पदार्थ हैं एक जड़ दूसरे चेतन अतएव उन्होंने प्रकृति पुरुष का पृथक पृथक जानना मुक्ति का कारण बतलाया कारण यह है कि वैशेषिक में बतला चुके थे कि साधर्म्य से सुख तथा वैधर्म्य से दुःख की प्राप्ति होती हैं। इसी कारण चेतन जीवात्मा को चेतन और अचेतन का ज्ञान आवश्यक है। उन्होंने सिद्ध किया कि जितना जगत हैं उसका उपादान कारण प्रकृति है परन्तु प्रकृति जड़ है और दुःख देने वाली है अतएव उसके कार्य जगत से जितनी प्रार्थना की जावेगी कुछ भी सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती। इसलिए प्रकृति पुरुष का विवेक करने वाला सांख्य शास्त्र बतलाया और अच्छे प्रकार से इस विषय को सिद्ध किया।

इसके पश्चात महात्मा पातञ्जलि ऋषि हुये। इनके बनाये शास्त्र का नाम "योगदर्शन" है। पातञ्जलि ऋषि ने कहा

कि संसार में जितने दुःख होते हैं वे सब चित की वृत्तियों के विक्षेप से अर्थात् मन के विचारों के स्थिर न होने से उत्पन्न होते हैं और प्रकृति के पदार्थों को मन जान कर आगे चल देता है जिससे चित वृत्ति एकान्त नहीं होती और चित के एकान्त (स्थिर) न होने से सुख की प्राप्ति नहीं होती। अतएव उन्होंने कहा कि योग करके चित की वृत्तियों को रोकना चाहिए क्योंकि संसार के समीप पदार्थों से चित की वृत्ति का अनुरोध नहीं हो सकता अतः अनन्त परमेश्वर के साथ अथवा चैतन्य जीवात्मा का परमात्मा के साथ योग होना चाहिए। इसके लिए उन्होने आठ अंग नियत किये।

(१) यम (२) नियम (३) आसन (४) प्राणायाम (५) प्रत्याहार (६) धारणा (७) ध्यान (८) समाधि। इस प्रकार से पातञ्जलि मुनि ने अविद्या को दूर करके जड़ से प्रीति हटा कर चैतन्य परमात्मा से योग करके सुख की प्राप्ति का निश्चय करा दिया।

इसके पश्चात् जैमिनी ऋषि हुये इन्होंने मीमांसाशास्त्र बनाया इनका विचार यह था कि योग से चित के रोकने में जो बुरे कर्मों से संसार में पैदा हुये अविद्या के संस्कार विघ्न कारक होंगे। उनसे कभी भी मन की वृत्तियाँ रुक न सकेंगी अतएव पहिले मन के मल रूपी दोष दूर करने के लिए शुभ नैमित्तिक कर्मों को करना चाहिए जिससे चित में दोष का लेष न रहे और मन का प्रवाह जो दुष्कर्मों की ओर लग रहा है हट कर

अच्छे कर्मों की ओर लग जावे फिर उस मल दोष को दूर होने के पश्चात् विक्षेप के दूर करने के साधन उपासना योग से काम चल जायगा उन्होंने व्रत दान इत्यादि बहुत से कर्म मल दोष के दूर करने के लिये बतलाये और उनकी विधि अपने "मीमांसाशास्त्र" में अच्छे प्रकार से प्रकाशित करदी।

इसके पश्चात् व्यास मुनी हुए जिन्होंने "वेदान्त शास्त्र" बनाया इनका विचार यह था कि प्रमाण का भी ज्ञान हो चुका और प्रमेय भी जान लिया और जड़ चेतन अर्थात् प्रकृति पुरुष को भी पृथक पृथक समझ लिया और योग करने का विचार भी ठीक है और योग में जो विघ्न पड़ेगा उसके रोकने को "मीमांसाशास्त्र" के कर्म भी याद हो गये परन्तु जिस चेतन के साथ योग करना है उसको तो बिल्कुल जाना ही नहीं अतः ब्रह्म के जानने की इच्छा करनी चाहिए। इसलिए उन्होंने "वेदान्त शास्त्र" बनाया जिसमें केवल ब्रह्म के यथार्थ रूप का ज्ञान हो जावे। जिससे इस सृष्टि की उत्पत्ति स्थिति और नाश होता है। इस कारण सम्पूर्ण वेदान्त शास्त्र में ब्रह्म ज्ञान बतलाया।

इस प्रकार "न्याय शास्त्र" गौतम ऋषि ने बताया, "वैशेषिकशास्त्र" कणाद मुनि ने रचा, "सांख्य शास्त्र" को कपिल आचार्य ने लिखा, "योग शास्त्र" का पातञ्जलि ने

निर्माण किया, "मीमांसा शास्त्र" जैमिनी ने और "वेदान्त शास्त्र" को व्यास ने बनाया।

इसी प्रकार पृथ्वी और सूर्य चन्द्रमा तथा नक्षत्रों के घूमने और उदय अस्त पर वर्षों तक ध्यान दिया और यहाँ तक हद करदी कि पृथ्वी सूर्य चन्द्रमा की परिधियों को ठीक ठीक नाप लिया और उनके चक्रों का हिसाब समझ कर सूर्य चन्द्रमा के ग्रहण लगने का गुरु ऐसा सच्चा बना लिया था जो आज तक असत्य नहीं हुआ। इस समय के बने शास्त्र का नाम "सूर्य सिद्धान्त" हैं।

जब शरीर के रोगों से बचाने के उपाय सोचे गये तब ऐसे यन्त्र बनाये गये थे कि जिनके द्वारा औषधियों के गुणों की परीक्षा होती थी और शरीर के अवयवों को चीर फाड कर जोड़ने की विद्या को यहाँ तक चर्मसीमा तक पहुंचाया था कि किसी का शिर और किसी का धड़ भी जोड़ दिया करते थे। इस समय के बने शास्त्र चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट, निघुंट आदि हैं।

जब ऋग्वेद और अथर्ववेद के मंत्रों पर विचार किया तब अग्नि विद्या और बिजली की विद्या को भी जान लिया था। फिर समुद्र पर दौड़ने वाली सवारी तार भृगर्मादि और आकाश में उड़ने वाले अनेक विमान भी बना लिये थे। जब क्षत्रियों का धनुर्विद्या सिखाने की आवश्यकता हुई तब शीतल-

बाण, अग्निबाण, और लखसंहारीबाण बनाये गये थे। इस समय के ऋषि मनु त्वष्टा तथा विश्वकर्मा आदि हुये हैं।

जब सामवेद पर ध्यान दिया गया तब षड़ज, रिषभ, गंधार, मध्यम, पञ्चम, धैवत, निषाद, इन सात स्वरों को पहिचान कर ऐसे राग रागिनी बनाये थे कि जिनसे सर्प, हाथी, सिंह, आदि जंगली जानवरों को मोह लेते थे।

इस समय में भी सब ब्राह्मण एक ही जाति के थे। अब यहाँ से बहुत काल पश्चात् ब्राह्मणों के दो भेद हो गये जो विध्याचल के उत्तर और दक्षिण देश में गौड़ और द्राविड़ नाम से पुकारे जाने लगे अर्थात् उत्तर देशवासी गौड़ और दक्षिण देश वासी द्राविड़ ब्राह्मण कहे जाते थे फिर एक एक भेद के पांच पांच भेद हुए अर्थात् पञ्च गौड़ और पञ्च द्राविड़ ऐसे दश प्रकार के ब्राह्मण होगये यथा :—

सारस्वता कान्यकुब्जा गौड़ उत्कल मैथिला।
पंचगौड़ा इतिख्याता विंध्यस्योत्तर वासिना॥
कर्णाटकाश्च तैलंगा द्राविड़ा महाराष्ट्रका।
गुर्जराश्चेति पंचैव द्राविड़ा विंध्य दक्षिणे॥

अर्थ :—सारस्वत १ कान्य कुब्ज २ गौड़ ३ उत्कल ४ और मैथिल ५ ये पंच गौड़ कहलाते हैं और विंध्याचल पर्वत के उत्तर में बसते हैं। कर्णाटक १ तैलङ्ग २ द्राविड़ ३ महा—

राष्ट्रियन ४ और गुर्जर ५ ये पंच द्राविड़ कहलाते हैं और विंध्याचल के दक्षिण देश में बसते हैं।

इस प्रकार पंचगौड़ और पंच द्राविड़ मिलकरदश ब्राह्मण कहलाते हैं। इनके अलावा और भी १२ प्रकार के गौड़ हैं, उनके नाम ये हैं

(१) मांडव्य (मालवी) गौड़ (२) श्री गौड़ (३) श्री हर्ष गौड़ (गङ्गा पुत्र गौड़) (४) हर्याणा गौड़ (५) वाल्मीकि गौड़ (६) वासिष्ठ गौड़ (७) सौरभ गौड़, (८) दालभ्य गौड़ (९) सुखसेन गौड़ (१०) भट्ट नागर गौड़ (११) सूर्यध्वज गौड़ (१२) माथुर गौड़, ये द्वादश गौड़ कहलाते हैं इनमे पंच गौड़ों कोमिलाने से १७ प्रकार के गौड़ होते हैं। अब तक गौड़ और द्राविड़ों का वृत्तान्त कहा।

अब आदि गौड़ों का वृतान्त लिखते हैं :—

पंच गौड़ों में कहे जो सारस्वत, कान्य कुब्ज, उत्कल और मैथिल हैं ये भी गौड़ ही हैं, परन्तु भिन्न भिन्न देशों में बसने से इनके नाम बदल गये हैं, जैसे सरस्वती नदी के किनारे के देशों में बसने से "सारस्वत" कन्नोज के राज्य में बसने से "कान्यकुब्ज" उत्कल देश में बसने से "उत्कल" मिथिलापुर से बसने मे मैथिल नाम पड़ा, परन्तु जो गौड़ अयाचक धर्म का पालन करते हुए अपने प्राचीन गौड़ देश में ही निवास

करते रहे वे अब तक भी आदि गौड़ कहलाते हैं। सब ब्राह्मणों से पहले इन्हीं आदि गौड़ ब्राह्मणों की प्रतिष्ठा हुई थी जो महाराजा जन्मेजय ने करी थी। महाराजा जन्मेजय महाराजा परीक्षित के पश्चात् तथा महाराजा अश्वमेध से पूर्व के हैं। इनके राज्य काल की अवधि ८४ वर्ष ७ मास २३ दिन की रही थी।

आदि गौड़ ब्राह्मणों के सम्बन्ध में राजा जन्मेजय और वटेश्वर मुनि के १४४४ शिष्यों के प्रमाण निम्नांकित उपलब्ध हुए ग्रन्थों में मिले हैं यथा :—

"ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तण्ड" के पृष्ठ संख्या ४२६ से ४२८ तक। बम्बई।

"जाति भास्कर" के पृष्ठ संख्या ७३ से ७४ तक। बम्बई।

"ब्राह्मण निर्णय" ग्रन्थ के पृष्ठ संख्या १५४ से आगे। फुलेरा।

"नित्यकर्म प्रयोगमाला" ग्रन्थ के पृष्ठ संख्या २६४ से २६६ तक। बम्बई।

"श्री आदि गौड़ प्रदीपिका" ग्रन्थ के पृष्ठ संख्या २८ से २६ तथा ७४ से ७५ तक।

"ब्राह्मणोत्पत्ति" ग्रन्थ के पृष्ठ संख्या १३ से १४ तक। अलीगढ़।

इस आर्य्यावर्त्त के बीच पूर्वकाल में महाराजा जनमेजय एक बड़े चक्रवर्ती राजा हो चुके हैं। एक समय उन्होंने बहुत बड़ा यज्ञ किया था, जिसमें बड़े बड़े ऋषि मुनि विद्वान् एकत्रित हुए थे जिसमें वटेश्वर मुनि को १४४४ शिष्यों सहित यज्ञ कराने को बुलाया था। यज्ञ की समाप्ति होने पर राजा अपने गुरू वटेश्वर मुनि को शिष्यों सहित महापूजा करके दक्षिणा देने को तैयार हुवा, वटेश्वर मुनि अयाचक ब्राह्मण थे वे राज प्रतिग्रह भी नहीं करते थे। इसलिए उन्होंने दक्षिणा लेना स्वीकार नहीं किया। तब राजा ने कहा कि "बिना दक्षिणा दिये यज्ञ पूरा (सफल) नहीं होता हैं;' इस प्रकार राजा के बहुत कहने पर मुनि और शिष्यों ने केवल एक एक पान का बीड़ा लेना स्वीकार किया, तब राजा ने बड़ी चतुराई से १४४४ संकल्प पत्रिका लिखवाई अर्थात् प्रत्येक चिट्ठी में एक एक ग्राम का दान का संकल्प था सो एक एक चिट्ठी पान के प्रत्येक बीड़े में रखवाकर चलते समय दिये मुनि और शिष्यों ने राजा को आशीर्वाद दिया। अचानक मुनि और शिष्यों की जल पर गमन की गति नष्ट हो गयी। जब पान खोल कर देखे गये तब यह गुप्त दान का भेद खुला। अन्त में यही हुआ कि जो जो ग्राम जिस जिस को मिला वह उसी में बसा और जिस ग्राम या नगर में बसा उसी पर उसका शासन हुआ, इन शासनों को कोई अल्ल और अवटंक भी कहते हैं॥

बंगदेश से लेकर अमरनाथ पर्यन्त गौड़ देश की स्थिति

है ऐसा एक श्लोक "आदि गौड़ दीपिका" ग्रन्थ में लिखा है :—

गौड़देशं समारभ्य भुवनेशान्तगः शिवे ।
गौड़ देशः समाख्यातः सर्वविद्या विशारदः ॥

मध्यदेश के अवान्तर आरण्यदेश जिसको हरियाणा और जंगल देश कहते हैं, तथा दिल्ली का प्रान्त सोनीपत, पानीपत, करनाल, कुरुक्षेत्र, फल्गु, कैथल, यमुना के प्रान्त का देश, हस्तिनापुर, मारवाड़, झूणझुनू, फतेहपुर, शेखावाटी, पुष्कर, मत्यस्य (अलवर व भरतपुर), विराट (बैराठ), भिवानी आदि स्थानों में गौड़ ब्राह्मणों का निवास है। अयोध्या के उत्तर सरयू नदी और सरयू के उत्तर सरवार तथा गौड देश है, यह 'ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तण्ड' ग्रंथ के रचियता का मत है। मत्स्यपुराण के अ० १२/श्लोक ३० पर तथा वायु पुराण के भाग २ अ० २६/श्लोक १६८ में श्रावस्तीपुरी का वर्णन गौड़ देश में किया गया है।

यह श्रावस्तीपुरी गौड़ देश में इस समय भी सरयू नदी के उत्तर गौंडा नगर के समीप वर्तमान हैं, जिस देश की सीमा पूर्व में गंगा और गण्डकी का सङ्गम है, पश्चिम और दक्षिण दिशा में सरयू है, उत्तर में हिमालय है इसके मध्य की भूमि का नाम गौड़ देश है गण्डकी नदी की पश्चिमी भूमि गौड़ देश कहलाती है।

इस स्थान में जो ब्राह्मण सृष्टि के आरम्भ से निवास करते हैं वे आदि गौड़ कहलाते हैं।

कहा जाता है कि लगभग एक सहस्र वर्ष बीते हैं कि बंगदेश के राजाओं ने पाँच गौड़ ब्राह्मणों को कार्यवश बुलाया था और सेवा से सन्तुष्ट कर वहीं रखा तब से इन लोगों का स्थान वहां भी पाया जाता है, परन्तु वास्तव में ये बंग निवासी नहीं हैं॥

"श्री आदि गौड़ प्रदीपिका" ग्रंथ में पृष्ठ संख्या २७ पर लिखा है कि आदि गौड़ ब्राह्मणों के १४४४ शासनों में से ७०३ शासन सनाढ्यों में गिने जाते हैं। प्रारम्भ से आदि गौड़ ब्राह्मण अयाचक रहे हैं परन्तु जिन्होंने याचक (याचना) और जाति विरुद्ध कार्य करने से ये सनाढ्य बाह्य कर दिये गये।

विशेष :—आदि गौड़ों के अब तक जितने शासन, गौत्र आदि मिले हैं उन्हें मैं लिखता हूँ। लिखने का क्रम निम्न प्रकार है :—सर्व प्रथम गोत्र का नाम अर्थात् जिस ऋषि की सन्तान हो उस ऋषि का नाम गोत्र होता है। शासन-शासन को अवटंक या अल्ल भी कहते हैं। प्रवर—पहले

प्रवरों की अंकों में संख्या दी गई है फिर प्रवरों के नाम दिये गये हैं। पदवी-इसे नूख भी कहते हैं। इसके पश्चात् क्रमशः शाखा, सूत्र, वेद, माता, पिता, ऋषि, गणपति और कुल देवी आदि का नाम अंकित किया गया है।

गोत्रों के विवरण के पश्चात एक शासन, गोत्र और पदवी की सारिणी दी गई है शासनों का क्रम हिन्दी वर्णमाला के अक्षरों के अनुसार रखा गया है।

अत्रि-गोत्र

शासन—अडीचवाल, गुडोरिया (गुन्डा), जाडीवाल, धरड, (धारुड), भिवाल (मींडवाल), आरठिया, मागरखोइया (मारोलिया), बादरा, बावनया, हरसन्या, बोगड, सोपल्या, भादोलिया, वसुखेड़ा, बावरवाल, बारोठ्या, मीड़वाल।

प्रवर	...	३, आत्रेय, आर्चन, सश्याव।
पदवी	...	शुक्ल
शाखा	...	माध्यन्दिनी
सूत्र	...	गोभिलीय
वेद	...	यजुर्वेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	अत्री
गणपति	...	दैदीप्यनाम् गणपति
कुलदेवी	...	रुची कुलदेवी
शिखा	...	दक्षिण
देवता	...	शिव
उपवेद	...	धनुर्वेद

शर्मा—जोशी

अंगिरा-गौत्र

शासन—कांकर, दोराड़ [दरड़], कंड़ा. भरीड़वाल. माला, बबीय, भूँबरा. लखाणा. घोडिंदा. गेंदा. सिडोल्या. सकलवाल

प्रवर	...	३. आंगिरस. वसिष्ठ. बार्हस्पत्य ।
पदवी	...	जोशी
शाखा	...	माध्यन्दिनी
सूत्र	...	कात्यायन
वेद	...	यजुर्वेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	अंगिरा
गणपति	...	महाकर्ण गणपति
कुलदेवि	...	जिण कुलदेवि
शिखा	...	दक्षिण
देवता	...	शिव
उपवेद	...	धनुर्वेद

शर्मा—जोशी

उपमन्यु-गोत्र

शासन—धारका. नोली. काकलवाल. धरीडवाल. छोंडिहा. धारजाण. बावल्या

प्रवर	...	३, वशिष्ठ, याज्ञवल्क्य, उपमन्यु
पदवी	...	दीक्षित
शाखा	...	माध्यन्दिनी
सूत्र	...	पारस्कर
वेद	...	यजुर्वेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	उपमन्यु
गणपति	...	कीर्तिनाम् गणपति
कुलदेवि	...	नदिया देवी
शिखा	...	दक्षिण
देवता	...	शिव
उपवेद	...	धनुर्वेद

शर्मा—जोशी

अघमर्षण-गोत्र

शासन—मुदडत, चुलेट

प्रवर	...	३, और्व, च्यवन, जमदग्नि,
पदवी	...	जोशी
शाखा	...	माध्यन्दिनी
सूत्र	...	कात्यायन
वेद	...	यजुर्वेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	अघमर्षण
गणपति	...	त्रिष्टधिनाम् गणपति
कुलदेवी	...	कार्श्यणां देवी
शिखा	...	दक्षिण
देवता	...	शिव
उपवेद	...	धनुर्वेद

शर्मा—जोशी

उद्दालक-गोत्र

शासन—खरखेलिया [खेखलिया]

प्रवर	...३,	विश्वामित्र, देवराज, उद्दालक
पदवी	...	पाठक
शाखा	...	माध्यन्दिनी
सूत्र	...	पारस्कर
वेद	...	यजुर्वेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	उद्दालक
गणपति	...	जनानन गणपति
कुलदेवि	...	कालीदेवी
शिखा	...	दक्षिण
देवता	...	शिव
उपदेश	...	धनुर्वेद

शर्मा—जोशी

कविस्त-गोत्र

शासन—अखवइया, इन्दोरिया, कोहनिया, कंछेरिया, छनफारिया, जलसुतिया, जाकिरवाल, धौरू, निदामपुरिया, बछगइया, विचौलिया, माहोनियां (मावल्या), साकसिंया

प्रवर	३,	कविस्त, देवराज, विश्वामित्र
पदवी	...	वाजपेयी
शाखा	...	माध्यन्दिनी
सूत्र	...	पारस्कर
वेद	...	यजुर्वेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	कवित्त
गणपति	...	महार्णनाम् गणपति
कुलदेवि	...	पथयारीदेवी
शिखा	...	वाम
देवता	...	विष्णु
उपवेद	...	धनुर्वेद

शर्मा—जोशी

कश्यप-गोत्र

शासन—सिरोल्या, सारोल्या, साकटा, गोल, मेन बरुणा, काल्या, कैरारिया, घाटिया, डाचोल्या, नारनौलिया, फतेपुरिया, भोगर, मुडसेंनिया, रस्सीवाल, सिरोइया, सेयल, धृवपाल्या

प्रवर	...	३, कश्यप, वत्स, नैध्रुव
पदवी	...	तिवारी
शाखा	...	माध्यन्दिनी
सूत्र	...	पारस्कार
वेद	...	यजुर्वेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	कश्यय
गणपति	...	गोलगणपति
कुलदेवी	...	चावंडा
शिखा	...	वाम
देवता	...	विष्णु
उपवेद	...	धनुर्वेद

शर्मा—जोशी

कात्यायन-गोत्र

शासन—धोकधाणी, धीमरवाल, चान्द्रावतयो, जोसी, ढलवाएया, गोपीपाण, पासछोडिया, तलवारिया,

प्रवर	...	३, कात्यायन, विश्वामित्र, वशिष्ठ
पदवी	...	त्रिपाठी
शाखा	...	माध्यन्दिनी
सूत्र	...	पारस्कर
वेद	...	यजुर्वेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	कात्यायन
गणपति	...	गंनाम् गणपति
कुलदेवी	...	चामुंडादेव
शिखा	...	दक्षिण
देवता	...	शिव
उपवेद	...	धनुर्वेद

शर्मा—जोशी

कौंडिन्य-गोत्र

शासन—जलबली, धावडा, ढंगी, धोल, जावता, जाकाला, हरदान्या, चांदिवाल, तासरवाल, सारसीवाल, नाकला, रुखवाल, गिलियाण, तोंदवाल, नागौरिया, बवेरवाल, (विरहटबाल, मानौरिया, रांडौलिया, सोनइयां, सिकरवाल,

प्रवर	...	३, आत्रेय, आर्चन, सश्याव
पदवी	...	अग्निहोत्री
शाखा	...	माध्यन्दिनी
सूत्र	...	पारस्कर
वेद	...	यजुर्वेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	कौंडिन्य
गणपति	...	धीरानाम् गणपति
कुलदेवी	...	जीणदेवी
शिखा	...	दक्षिण
देवता	...	शिव
उपवेद	...	धनुर्वेद

शर्मा—जोशी

कौशिक-गोत्र

शासन—मुडवाल, ककरेटिया, दांतला, नागवाणा, भालिका, नादावतिया, हरोल्या, मुडला, कोचप, ऐरंडवाल, ढाका, जगथली, दारोला, वावणोधा, कारताण्या, कांलिवाल, चकोत्रे (वस्तीवाल, चकत्ता) किनमासिया,

प्रवर	...	३, कौशिक, देवराज, अघमर्षण,
पदवी	...	अग्निहोत्री
शाखा	...	आश्वलायनी
सूत्र	...	आश्वलायन
वेद	...	ऋग्वेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	कौशिक
गणपति	...	मुखनाम् गणपति
कुलदेवी	...	समदीरी देवी
शिखा	...	दक्षिण
देवता	...	शिव
उपवेद	...	आयुर्वेद

शर्मा—जोशी

कपिल-गौत्र

शासन—गिड़ा (गेंडा), गिलडा, वदेरा, धरवाणी

प्रवर	...३.	कपिल, अत्रेपा, पार्णवा
पदवी	...	जोशी
शाखा	...	कौथुमी
सूत्र	...	गोभिलीय
वेद	...	सामवेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	कपिल
कुलदेवी	...	नदियादेवी
गणपति	...	कोलवनान् गणपति
शिखा	...	वाम
देवता	...	विष्णु
उपवेद	...	गान्धर्ववेद

शर्मा—जोशी

काशकृतस्नु-गोत्र

शासन—पिपरोटा (पारोट्या), खाटर वाल (खरसट-वाल), वत्सारा, जागदा, सपोज, गदनाना, भाडवाड, मोसवाल, गलिवाल, छतरकला, सासदा, समदरवाल, पिपोला, अदरत, मादानि, वागोलवाल, बादलीवाल,

प्रवर	...	३, गौतम, गिरस, गृत्समदा
पादवी	...	पुरोहित
शाखा	...	माध्यन्दिनी
सूत्र	...	पारस्कर
वेद	...	यजुर्वेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
गणपति	...	मुदरायणनाम् गणपति
कुलदेवि	...	सिंधि कुलदेवि
ऋषि	...	काशकृतस्नु
शिखा	...	दक्षिण
देवता	..	शिव
उपवेद	...	धनुर्वेद

शर्मा—पुरोहित

गर्ग-गौत्र

शासन—कोकासिया (कांकसिया), शलकिया, मतरो, मररोल्या, वासोल्या, नर्रऊआ,

प्रवर	...	३, भार्गव, च्यवन, आप्नुवान,
पदवी	...	दीक्षित
शाखा	...	पिप्पलायनी
सूत्र	...	गोभिलीय
वेद	...	अथर्ववेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	गर्ग
गणपति	...	धोलिवनां गणपति
कुलदेवि	...	कांकसीयादेवी
शिखा	...	दक्षिण
देवता	...	शिव
उपवेद	...	स्थापत्यवेद

शर्मा—जोशी

गौतम-गौत्र

शासन–खेडवाल (खेडियाबाल), सुपोजा,
सरवला, राजोरिया (राजोर), भिंडा (भैंडा), पिंडिपाप्या, खेडवाल (खेडिवाल), रजमोरिया, छतरीवाल, साडोल्या, माठा, पंचरग्या, जटोइया, समरेडिया,

प्रवर	...	३, आंगिरस्, बार्हस्पत्य, गौतम
पदवी	...	अग्निहोत्री
शाखा	...	माध्यन्दिनी
सूत्र	...	पारस्कर
वेद	...	यजुर्वेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	गौतम
गणपति	...	अद्विनाम् गणपति
कुलदेवि	...	कृष्णादेवी
शिखा	...	दक्षिण
देवता	...	शिव
उपवेद	...	धनुर्वेद

शर्मा–त्रिपाठी

जातुकर्ण्य-गोत्र

शासन–लापस्या मोर, लाटा

प्रवर	...३,	जातुकर्ण, अत्रि, वशिष्ठ
पदवी	...	जोशी
शाखा	...	माध्यन्दिनी
सूत्र	...	पारस्कर
वेद	...	यजुर्वेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	जातुकर्ण
गणपति	...	विनायक गणपति
कुलदेवि	...	चाणादेवी
शिखा	...	दक्षिण
देवता	...	शिव
उपवेद	...	धनुर्वेद

शर्मा–जोशी

जैमिनी–गौत्र

शासन–मोरीय, थमीकी, भारा, मरत्रु, हृदया, शुमका चेदक, नरवरिया, मोटाल्या, सेलुपरया, मोमनिया, आनौरिया, मुडजोरिया, अगरोइया, कराहरीवाल, खामपुरिया, घटवारिया, झारोलिया, पड़ौलिया, बढ़ौलिहा, तेनगुरिया (त्रिगुणायक), धौलपुरिया, (धौरमैया), मीलवार, बनयारिया

प्रवर	···	३, विश्वामित्र, देवराज, उद्दालक
पदवी	···	श्रोत्रिय
शाखा	···	माध्यन्दिनी
सूत्र	···	पारस्कर
वेद	···	यजुर्वेद
माता	···	गायत्री
पिता	···	ॐ
ऋषि	···	जैमिनी
गणपति	···	गजानन गणपति
कुलदेवि	···	हेमाद्रीदेवि
शिखा	···	दक्षिण
देवता	···	शिव
उपवेद	···	धनुर्वेद

शर्मा–व्यास

धनञ्जय–गोत्र

शासन—दूदयो, तेरसका, वावलिया, बोहरा, टाटोपर्या, कोंदिवाल, सुरभटवाल, सांजानेरिया, मोदवाल, भरमुनिया, वामोरिया, पैगरिया, नाटा, टोडीवाल, छीलवार, उटवारिया, इच्छावत

प्रवर	···	३, मधुच्छदस्, विश्वामित्र, धनञ्जय
पदवी	···	त्रिवेदी
शाखा	···	कौथुमी
सूत्र	···	गोभिलीय
वेद	···	सामवेद
माता	···	गायत्री
पिता	···	ॐ
ऋषि	···	धनञ्ज
गणपति	···	सुभटनाम् गणपति
कुलदेवी	···	कुणीचरी देवी
शिखा	···	दक्षिण
देवता	···	शिव
उपदेव	···	गान्धर्ववेद

शर्मा—त्रिपाठी

पाराशर–गोत्र

शासन–पंचलाणि, छपारिया (छिपारया), मुवार–स्वामी, ढ़करड, मोकचुम्बा

प्रवर	३,	वशिष्ठ, सांकृत, पाराशर
पदवी	...	मिश्र
शाखा	...	माध्यन्दिनी
सूत्र	...	पारस्कर
वेद	...	यजुर्वेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	पाराशर
गणपति	...	शुभनाम् गणपति
कुलदेवि	...	जयंतीदेवी
शिखा	...	दक्षिण
देवता	...	शिव
उपवेद	...	धनुर्वेद

शर्मा–स्वामी

भारद्वाज–गोत्र

शासन—गढ़वाल (गोडवाल), गुरावा (गुरावंड), गंगावत, फटवाडया (फैवारिया), मांडोल्या (मांचोलिया), रामपुरिया, मल, कुणिजा, सरमोर, पंचगुणी, साडोलिया, सामरे, हरितवाल (अगरिया; हातीवाल), सोनबाल, संकटतोड़, सुरोल्या (संगेला; सुरीरिया), सहजचौकीवाल, मुड़ाजर, रैवाडिया, बांदौलिया, मारश्या, कन्नोजिया, बरथौनियां नौगइया, जलोथरिया, गाडेलिया

प्रवर	...३,	आंगिरस्, वार्हस्पत्य, भारद्वाज,
पदवी	...	पांड़े
शाखा	...	माध्यन्दिनी
सूत्र	...	पारस्कर
वेद	...	यजुर्वेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	भारद्वाज
गणपति	...	गजानन गणपति
कुलदेवि	...	सहदेवी
शिखा	...	दक्षिण
देवता	...	शिव
उपदेव	...	धनुर्वेद

शर्मा–जोशी

पाराशर–गोत्र

शासन–पंचलाणि, छपारिया (छिपारया), मुवार–स्वामी, ढ़करड, मोकचुम्बा

प्रवर	३,	वशिष्ठ, सांकृत, पाराशर
पदवी	...	मिश्र
शाखा	...	माध्यन्दिनी
सूत्र	...	पारस्कर
वेद	...	यजुर्वेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	पाराशर
गणपति	...	शुभनाम् गणपति
कुलदेवि	...	जयंतीदेवी
शिखा	...	दक्षिण
देवता	...	शिव
उपवेद	...	धनुर्वेद

शर्मा–स्वामी

भारद्वाज–गोत्र

शासन—गढ़वाल (गोडवाल), गुरावा (गुरावंड), गंगावत, फटवाडया (फैवारिया), मांडोल्या (मांचोलिया), रामपुरिया, भल, कुणिजा, सरमोर, पंचगुणी, साडोलिया, सामरे, हरितवाल (अगरिया; हातीवाल), सोनबाल, संकटतोड़, सुरोल्या (संगेला; सुरीरिया), सहजचौकीवाल, मुड़ाजरे, रैवाडिया, बांदौलिया, मारश्या, कन्नोजिया, बरथौनियां नौगइया, जलोथरिया, गाडेलिया

प्रवर	...	३, आंगिरस्, बार्हस्पत्य, भारद्वाज,
पदवी	...	पांड़े
शाखा	...	माध्यन्दिनी
सूत्र	...	पारस्कर
वेद	...	यजुर्वेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	भारद्वाज
गणपति	...	गजानन गणपति
कुलदेवि	...	सहदेवी
शिखा	...	दक्षिण
देवता	...	शिव
उपदेव	...	धनुर्वेद

शर्मा–जोशी

भार्गव-गोत्र

शासन—काल्या, रहुतिवा, घसवाका, सीवर, सुरचान्या, रुणेजा, दुजिमेका, वहीनया, भूंसन, सोंधारिया सुसरान (सुसरिहा), वाघौरिया (वागोरया), दुलारिया, टिटवारिया (टिलावत), अडींगिया, किरीट (किरारीवाल), गोधनियां (घुवान्या),

प्रवर	...	४, भार्गव, च्यवन, जैमिनी, आप्नुवान्,
पदवी	...	दीक्षित
शाखा	...	माध्यन्दिनी
सूत्र	...	पारस्कर
वेद	...	ऋजुर्वेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	भार्गव
गणपति	...	कृतांतनाम् गणपति
कुलदेवी	...	सति देवी
शिखा	...	दक्षिण
देवता	...	शिव
उपवेद	...	धनुर्वेद

शर्मा—जोशी

मौदगल्य-गोत्र

शासन—आस्तीयाणा (अष्टार्विणा), गगरीवाल, वेणा, माउका, कातोला, हिकलारा, जाता, बलमकर, गंधा, नोस्था, गरपत, चावणी, इष्टान्या, गगड, सान, गाजरवाल, दिपाल, बबंदा, मसालवावाल, बडका, गल, समधा, देवसोरो अचकूटा, मलनपरी, पगोल्या,

प्रवर	...	३, अंगिरा, भाग्यंश्व, मौदगल्य
पदवी	...	पुरोहित
शाखा	...	माध्यन्दिनी
सूत्र	...	पारस्कार
वेद	...	यजुर्वेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	मौदगल्य
गणपति	...	ऋषिणाम् गणपति
कुलदेवी	...	सतिदेवी
शिखा	...	दक्षिण
देवता	...	शिव
उपवेद	...	धनुर्वेद

शर्मा—देवशर्मा

यमदग्नि-गोत्र

शासन—उगीकल, चेतसरिया, बुवाल, बासोद्या, बासोड़वाल, खिरारीवाल

प्रवर	...	५, वत्स, च्यवन, और्व, अत्यावान् यमदग्नि
पदवी	...	श्रोत्रिय
शाखा	...	माध्यन्दिनी
सूत्र	...	पारस्कर
वेद	...	यजुर्वेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	यमदग्नि
गणपति	...	कपिलनां गणपति
कुलदेवि	...	चामुंडा देवी
शिखा	...	दक्षिण
देवता	...	शिव
उपवेद	...	धनुर्वेद

शर्मा-त्रिपाठी

वत्स-गौत्र

शासन—आस्टो, लिदएया, पानड्या, जयपुर्या, नदवाणी, सांगानेरिया, अंटागुरे, मूंदोरिया, अंधोपिया, (धोपिया), चीमवाल (चींवाल), कोहिनियां, मंगोलिया, बहर-वाल, पत्सारिया, जेवरिवा, नोंहिया, धौरेटिया, लुडेरिया,

प्रवर	...५.	वत्स, च्यवन, और्व अत्वान्, यमदग्नि
पदवी	...	मिश्र
शाखा	...	माध्यन्दिनी
सूत्र	...	पारस्कर
वेद	...	यजुर्वेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	वत्स
गणपति	...	एकदंतनाम् गणपति
कुलदेवी	...	चामुंडा देवी
शिखा	...	दक्षिण
देवता	...	शिव
उपवेद	...	धनुर्वेद

शर्मा-जोशी

वरवंगन-गोत्र

शासन—मासोल्या, वण्या, डोरोवाल (रोडीवाल),

प्रवर	...	३, वधूल, कौशिक, अव्या
पदवी	...	जोशी
शाखा	...	माध्यन्दिन
सूत्र	...	पारस्कर
वेद	...	यजुर्वेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	वरवंगन
गणपति	...	गजानन गणपति
कुलदेवी	...	सतिदेवी
शिखा	...	दक्षिण
देवता	...	शिव
उपवेद	...	धनुर्वेद

शर्मा—जोशी

वाशिष्ठ-गोत्र

शासन—चूलीवाल, तिलोडिया, दीक्षित, पंचलंग्या, सरसालिया, मोपल, सरसोला, डिडवान्या, खडनावल्या, दरघु, नेणक, बगेरवाल, चलवारी, वसेटिया, नदाणी, खैरारिया

प्रवर	...	३, वशिष्ठ, शक्ति, पाराशर
पदवी	...	शुक्ल
शाखा	...	कौथुमी
सूत्र	...	पारस्कर
वेद	...	सामवेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	वाशिष्ठ
गणपति	...	धीरनाम् गणपति
कुलदेवि	...	सत्यवती देवी
शिखा	...	दक्षिण
देवता	...	शिव
उपवेद	...	गान्धर्ववेद

शर्मा—जोशी

वामदेव-गोत्र

शासन—जाणीपाल, हरवाणी, झुरनाटा, हायग्रीवा

प्रवर	...	३, अंगिरस, वामदेव, बार्हदुक्षय
पदवी	...	जोशी
शाखा	...	माध्यन्दिनी
सूत्र	...	पारस्कर
वेद	...	यजुर्वेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	वामदेव
गणपति	...	कौंडननाम् गणपति
कुलदेवि	...	कल्याणी देवि
शिखा	...	दक्षिण
देवता	...	शिव
उपवेद	...	धनुर्वेद

शर्मा—जोशी

विश्वामित्र-गोत्र

शासन—चाकेलिया (चाकलीवाल), मारस्या, देगडिया, सुमटा, छलिवाल, कोइन्दा, मेलु, बछीवाल, मामडोन्या, मेडवाल

प्रवर	...	३, विश्वामित्र, मरीची, कौशिक
पदवी	...	व्यास
शाखा	...	माध्यन्दिनी
सूत्र	...	गोभिल
वेद	...	सामवेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	विश्वामित्र
गणपति	...	धूनीनाम् गणपति
कुलदेवी	...	वागीदेवी
शिखा	...	वाम
देवता	...	विष्णु
उपवेद	...	गान्धर्व वेद

शर्मा—व्यास

बृहस्पति-गोत्र

शासन—राणोल्या, ढ़ाचोलिया (ढ़ाचोल्या), डाकोल्या, बबड, मीतिया, सातुखरा, नोटोदा, कापटी, जपटवाल, गुलपरा, सवदा, दादरा, पोत, नगींया, दवलत, भारंगा, करंटा

प्रवर	...	३. बृहस्पति, कपिल, पार्वण
पदवी	...	जोशी
शाखा	...	माध्यन्दिनी
सूत्र	...	पारस्कर
वेद	...	यजुर्वेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	बृहस्पति
गणपति	...	सहायकानाम् गणपति
कुलदेवी	...	अरुंधती देवी
शिखा	...	दक्षिण
देवता	...	शिव
उपवेद	...	धनुर्वेद

शर्मा—जोशी

शांडिल्य-गोत्र

शासन—सागवाल, नुनेरिया, चोमुवाल, सरसोल्या, डाण्या, ददभरीया

प्रवर	...	३, शांडिल्य, असित, देवल
पदवी	...	अग्निहोत्री
शाखा	...	कौथुमी
सूत्र	...	गोभिलीय
वेद	...	सामवेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	सांडिल्य
गणपति	...	श्री गणपति
कुलदेवि	...	नरवारिया देवी
शिखा	...	दक्षिण
देवता	...	शिव
उपवेद	...	गान्धर्वेद

शर्मा—जोशी

शौनक-गोत्र

शासन—भादुमोता, छापरवाल, संचोरया, पोपल्या, जगीमोड, जेखत, सिरोपट, जाड, सोंकरवाल, खाचरया, मांगसीण ।

प्रवर	...	३, भारद्वाज, गृत्समद, शौनक
पदवी	...	द्विवेदी
शाखा	...	माध्यन्दिनी
सूत्र	...	पारस्कर
वेद	...	यजुर्वेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	शौनक
गणपति	...	गजानन गणपति
कुलदेवी	...	सति देवी
शिखा	...	दक्षिण
देवता	...	शिव
उपवेद	...	धनुर्वेद

शर्मा—जोशी

सांस्कृत-गोत्र

शासन—दूदोलिया (दोलिया), वारल्या, मुहरेनियां, भारंडवाल, पंचार्या, सुस्वान्या,

प्रवर	३,	सांख्यायन, किल, सांकृत
पदवी	...	पांडे
शाखा	...	माध्यन्दिनी
सूत्र	...	पारस्कर
वेद	...	यजुर्वेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	सांकृत
गणपति	...	श्रीगणानाम् गणपति
कुलदेवि	...	जिणय देवी
शिखा	...	दक्षिण
देवता	...	शिव
उपवेद	...	धनुर्वेद

शर्मा—व्यास

सोपायन-गोत्र

शासन–पंड्या,डोल्या, ढ़ड, खारीठ

प्रवर	...	५, और्व, च्यवन, भार्गव, जमदग्नि, अग्रवंत
पदवी	...	मिश्र
शाखा	...	माध्यन्दिनी
सूत्र	...	पारस्कर
वेद	...	यजुर्वेद
माता	...	गायत्री
पिता	...	ॐ
ऋषि	...	सोपायन
गणपति	...	गजानन गणपति
कुलदेवि	...	शीला देवी
शिखा	...	दक्षिण
देवता	...	शिव
उपवेद	...	धनुर्वेद

शर्मा–मिश्र

सरल सारिणी

इस सारिणी में हिन्दी वर्णमाला के अक्षरों के अनुसार शासन दिये गये है। कोष्टक में जो शासन दिये गये हैं वे सम्बन्धित शासन के ही अनेक रूपों में से हैं। सुगमता के लिये शासन के ज्ञात हो जाने पर गोत्र की जानकारी मिल जायेगी। गोत्र के ज्ञात हो जाने पर पदवी, प्रवर, शाखा, सूत्र आदि की पूरी जानकारी मिल जायेगी।

	शासन	गोत्र	पदवी
१	अखवइया	कविस्त	वाजपेयी
२	अदरत	काशकृतस्नु	पुरोहित
३	अगरोइया	जैमिनी	श्रोत्रिय
४	अडींगिया	भार्गव	दीक्षित
५	अचकूटा	मौदगल्य	पुरोहित
६	अडीचवाल	अत्रि	शुक्ल
७	आनौरिया	जैमिनी	श्रोत्रिय
८	आस्तीयाणा (आष्टाविणा)	मौदगल्य	पुरोहित
		"	"
९	आस्टो	वत्स	मिश्र
१०	आरठिया	अत्रि	शुक्ल

शासन	गोत्र	पदवी
११ इन्दोरिया	कविस्त	वाजपेयी
१२ इच्छावत	धनञ्जय	त्रिवेदी
१३ इष्टान्या	मौदगल्य	पुरोहित
१४ उटवारिया	धनञ्जय	त्रिवेदी
१५ उमीकल	यमदग्नि	श्रोत्रिय
१६ एंरडवाल	कौशिक	अग्निहोत्री
१७ अंटागुरे	वत्स	मिश्र
१८ अंधोपिया (धोपिया)	वत्स ,,	मिश्र "
१९ कंडा	अंगिरा	जोशी
२० ककरेटिया	कौशिक	अग्निहोत्री
२१ कराहरीवाल	जैमिना	श्रोत्रिय
२२ कनोजिया	भारद्वाज	पांडे
२३ करंटा	बृहस्पति	जोशी
२४ कंछेरिया	कविस्त	वाजपेयी
२५ काकलवाल	उपमन्यु	दीक्षित
२६ काल्या	कश्यप	तिवारी
२७ कारताएया	कौशिक	अग्निहोत्री
२८ कालिवाल	कौशिक	अग्निहोत्री
२९ कापल्या	भार्गव	दीक्षित
३० कांकर	अंगिरा	जोशी

शासन	गोत्र	पदवी
३१ कापटी	बृहस्पति	जोशी
३२ कातोला	मौदगल्य	पुरोहित
३३ किनमासिया	कौशिक	अग्निहोत्री
३४ किरीट (किरारीवाल)	भार्गव ,,	दीक्षित ,,
३५ कुणिजा	भारद्वाज	पांडे
३६ कैरारिया	कश्यप	तिवारी
३७ कोहनिया	कविस्त	वाजपेयी
३८ कोचप	कौशिक	अग्निहोत्री
३९ कोकासिया (कांकसिया)	गर्ग ,,	दीक्षित ,,
४० कोंदिवाल	धनञ्जय	त्रिवेदी
४१ कोहिनिया	वत्स	मिश्र
४२ कोइन्दा	विश्वामित्र	व्यास
४३ खरखेलिया (खेखलिया)	उद्दालक ,,	पाठक ,,
४४ खडनावल्या	वाशिष्ठ	शुक्ल
४५ खाटरवाल (खरसटवाल)	काशकृतस्नु ,,	पुरोहित ,,
४६ खापुरिया	जैमिनी	श्रोत्रिय
४७ खाचर्या	शौनक	द्विवेदी

	शासन	गोत्र	पदवी
४८	खारीठ	सोपायन	मिश्र
४९	खिरारीवाल	यमदग्नि	श्रोत्रिय
५०	खुडाएया	शांडिल्य	अग्निहोत्री
५१	खेडियावाल (खेडवाल)	गौतम ,,	अग्निहोत्री ,,
५२	खेडिवाल (खेड़वाल)	गौतम ,,	अग्निहोत्री ,,
५३	खैरारिया	वाशिष्ठ	शुक्ल
५४	गढ़वाल (गोंडवाल)	भारद्वाज ,,	पडें ,,
५५	गंगावत	भारद्वाज	पांडे
५६	गगरीवाल	मौदगल्य	पुरोहित
५७	गंधा	मौदगल्य	पुरोहित
५८	गरपत	मौदगल्य	पुरोहित
५९	गगड	मौदगल्य	पुरोहित
६०	गल	मौदगल्य	पुरोहित
६१	गलिवाल	काशकुतस्नु	पुरोहित
६२	गदनाना	काशकृतस्नु	पुरोहित
६३	गाजरवाल	मौदगल्य	पुरोहित
६४	गांगमीण	शौनक	द्विवेदी
६५	गिलियाण	कौंडिन्य	अग्निहोत्री

	शासन	गोत्र	पदवी
६६	गाडेलिया	भारद्वाज	पांडे
६७	गिंडा (गेंडा)	कपिल ,,	जोशी ,,
६८	गिलडा	कपिल	जोशी
६९	गुडोरिया (गुन्डा)	अत्रि ,,	शुक्ल ,,
७०	गुरावा (गुरावंड)	भारद्वाज ,,	पाडे ,,
७१	गुलपुरा	बृरस्पति	जोशी
७२	गेंदा	अंगिरा	जोशी
७३	गोल	कश्यप	तिवारी
७४	गोधनियां (घुवान्या)	मार्गव ,,	दीक्षित ,,
७५	गोपीपाण	कात्यायन	त्रिपाठी
७६	घटवारिया	जैमिनी	श्रोत्रिय
७७	घाटिया	कश्यप	तिवारी
७८	घोडिदा	अंगिरा	जोशी
७९	चकोत्रे (चकत्ता) (वस्तीवाल)	कौशिक ,, ,,	अग्निहोत्री ,, ,,
८०	चसवाका	भार्गव	दीक्षित

	शासन	गोत्र	पदवी
८१	चलवारी	वाशिष्ठ	शुक्ल
८२	चान्द्रावतयो	कात्यायन	त्रिपाठी
८३	चांदिवाल	कौंडिन्य	अग्निहोत्री
८४	चावणी	मौदगल्य	पुरोहित
८५	चाकोलिया	विश्वामित्र	व्यास
८६	चुलेट	अघमर्षण	जोशी
८७	चूलीवाल	वाशिष्ठ	शुक्ल
८८	चेदक	जैमिनी	श्रोत्रिय
८९	चेतसरिया	यमदग्नि	श्रोत्रिय
९०	चोमुवाल	शांडिल्य	अग्निहोत्री
९१	छनफारिया	कविस्त	वाजपेयी
९२	छतरकला	काशकृतस्नु	पुरोहित
९३	छतरीवाल	गौतम	अग्निहोत्री
९४	छपारिया (छिपार्या)	पाराशर ,,	मिश्र ,,
९५	छलिवाल	विश्वामित्र	व्यास
९६	छापरवाल	शौनक	द्विवेदी
९७	छीलवार	धनञ्जय	त्रिवेदी
९८	छोंडहा	उपमन्यु	दीक्षित
९९	जलसुतिया	कविस्त	वाजपेयी
१००	जलवली	कौंडिन्य	अग्निहोत्री

	शासन	गोत्र	पदवी
१०१	जगथली	कौशिक	अग्निहोत्री
१०२	जटोइया	गौतम	अग्निहोत्री
१०३	जलोथरिया	भारद्वाज	पांडे
१०४	जगीमोड	शौनक	द्विवेदी
१०५	जयपुर्या	वत्स	मिश्र
१०६	जपटवाल	बृहस्पति	जोशी
१०७	जाकिरवाल	कविस्त	मिश्र
१०८	जावता	कौंडिन्य	अग्निहोत्री
१०९	जाकाला	कौंडिन्य	अग्निहोत्री
११०	जागदा	काशकृतस्नु	पुरोहित
१११	जाडीवाल	अत्रि	शुक्ल
११२	जाता	मौदगल्य	पुरोहित
११३	जाणीपाल	वामदेव	जोशी
११४	जाड	शौनक	द्विवेदी
११५	जेवरिया	वत्स	मिश्र
११६	जेखत	शौनक	द्विवेदी
११७	जोसी	कात्यायन	त्रिपाठी
११८	झारोलिया	जैमिनी	श्रोत्रिय
११९	झुरनाट	वामदेव	जोशी
१२०	टाटोपर्या	धनञ्जय	त्रिवेदी
१२१	टिटवारिया	भार्गव	दीक्षित

	शासन	गोत्र	पदवी
	(टिलावत)	मार्गव	दीक्षित
१२२	टोड़ीवाल	धनञ्जय	त्रिवेदी
१२३	डाकोल्या	बृहस्पति	जोशी
१२४	डांचोल्या	कश्यप	तिवारी
१२५	डिडवान्या	वाशिष्ठ	शुक्ल
१२६	डोरीवाल	वरवंगन	जोशी
	(डोरवाल)	,,	,,
१२७	डोल्या	सोपायन	मिश्र
१२८	ढड	सोपायन	मिश्र
१२९	ढंगी	कौंन्डिय	अग्निहोत्री
१३०	ढ़करड	पाराशर	मिश्र
१३१	ढ़लवाएया	कात्यायन	त्रिपाठी
१३२	ढ़ाका	कौशिक	अग्निहोत्री
१३३	ढ़ाचौलिया	बृहस्पति	जोशी
	(ढ़ाचोल्या)	,,	,,
१३४	तलवारिया	कात्यायन	त्रिपाठी
१३५	तासरवाल	कौंडिन्य	अग्निहोत्री
१३६	तिलोडिया	वाशिष्ठ	शुक्ल
१३७	तेनगुरिया	जैमिनी	श्रोत्रिय
	(त्रिगुणायक)	,,	,,
१३८	तेरसका	धनञ्जय	त्रिवेदी

	शासन	गोत्र	पदवी
१३९	तोंदवाल	कौंडिन्य	अग्निहोत्री
१४०	थमीका	जैमिनी	श्रोत्रिय
१४१	दरघु	वाशिष्ठ	शुक्ल
१४२	दवलत	बृहस्पति	जोशी
१४३	ददमरीया	शांडिल्य	अग्निहोत्री
१४४	दांतला	कौशिक	अग्निहोत्री
१४५	दारोला	कौशिक	अग्निहोत्री
१४६	दादरा	बृहस्पति	जोशी
१४७	दिपाल	मौदगल्य	पुरोहित
१४८	दीक्षित	वाशिष्ठ	शुक्ल
१४९	दुजिमेका	मार्गव	दीक्षित
१५०	दुलारिया	मार्गव	दीक्षित
१५१	दूदयो	धनञ्जय	त्रिवेदी
१५२	दूदोलिया	सांकृत	पांडे
	(दोलिया)	,,	,,
१५३	देवसोरा	मौदगल्य	पुरोहित
१५४	देगडिया	विश्वामित्र	व्यास
१५५	दोराड़	अंगिरा	जोशी
	(दरड)	,,	,,
१५६	धरड	अत्रि	शुक्ल
	(धारुंड)	,,	,,

	शासन	गोत्र	पदवी
१५७	धरीडवाल	उपमन्यु	दीक्षित
१५८	धरवाणी	कपिल	जोशी
१५९	धारजाण	उपमन्यु	दीक्षित
१६०	धावड़ा	कौडिन्य	अग्निहोत्री
१६१	धारका	उपमन्यु	दीक्षित
१६२	धीमरवाल	कात्यायन	त्रिपाठी
१६३	धृवपाल्या	कश्यप	तिवारी
१६४	धोकधाणी	कात्यायन	त्रिपाठी
१६५	धोल	कौंडिन्य	अग्निहोत्री
१६६	धौरु	कविस्त	वाजपेयी
१६७	धौलपुरिया	जैमिनी	श्रोत्रिय
—	(धौरमैया)	,,	,,
१६८	धौरेटिया	वत्स	मिश्र
१६९	नर्रऊआ	गर्ग	दीक्षित
१७०	नरवरिया	जैमिनी	श्रोत्रिय
१७१	नदवाणी	वत्स	मिश्र
१७२	नगींया	बृहस्पति	जोशी
१७३	नरनौलिया	कश्यप	तिवारी
१७४	नाकला	कौंडिन्य	अग्निहोत्री
१७५	नागौरिया	कौंडिन्य	अग्निहोत्री
१७६	नागावाणा	कौशिक	अग्निहोत्री

	शासन	गोत्र	पदवी
१७७	नादावतिय	कौशिक	अग्निहोत्र
१७८	नाटा	धनञ्जय	त्रिवेदी
१७९	नादाणी	वाशिष्ठ	शुक्ल
१८०	निदामपुरिया	कविस्त	वाजपेयी
१८१	नुनेरिया	शांडिल्य	अग्निहोत्री
१८२	नेठक	वाशिष्ठ	शुक्ल
१८३	नोली	उपमन्यु	दीक्षित
१८४	नोस्था	मौदगल्य	पुरोहित
१८५	नोंहिया	वत्स	मिश्र
१८६	नोटोदा	बृहस्पति	जोशी
१८७	नौगइया	भारद्वाज	पांडे
१८८	पंचरग्या	गौतम	अग्निहोत्री
१८९	पडीलिया	जैमिनी	श्रोत्रिय
१९०	पंचलाणि	पाराशर	मिश्र
१९१	पंचगुणी	भारद्वाज	पांडे
१९२	पत्सारिया	वत्स	मिश्र
१९३	पंचलग्या	वाशिष्ठ	शुक्ल
१९४	पंचार्या	सांकृत	पांडे
१९५	पंड्या	सोपायन	मिश्र
१९६	पाम छोडिया	कात्यायन	त्रिपाठी
१९७	पागोल्या	मौदगल्य	पुरोहित

	शासन	गोत्र	पदवी
१९८	पानड्या	वत्स	मिश्र
१९९	पिपरोटा (पारोट्या)	काशकृतस्नु	पुरोहित
		,,	,,
२००	पिपोला	काशकृतस्नु	पुरोहित
२०१	पिडिपाप्या	गौतम	अग्निहोत्री
२०२	पैगरिय	धनञ्जय	त्रिवेदी
२०३	पोत	बृहस्पति	जोशी
२०४	पोपल्या	शौनक	द्विवेदी
२०५	फठवाडया (फटवाडिया)	भारद्वाज	पांडे
		,,	,,
२०६	फतेहपुरिया	कश्यप	तिवारी
२०७	बवेर वाल (विरहटवाल)	कौंडिन्य	अग्निहोत्री
		,,	,,
२०८	बनवारिया	जैमिनी	श्रोत्रिय
२०९	बलमकर	मौदगल्य	पुरोहित
२१०	बबंदा	मौदगल्य	पुरोहित
२११	बबीया	अंगिरा	जोशी
२१२	बड़का	मौदगल्य	पुरोहित
२१३	बहरवाल	वत्स	मिश्र
२१४	बरुण	कश्यप	तिवारी
२१५	बदेरा	कपिल	जोशी

	शासन	गोत्र	पदवी
२१६	वत्सारा	काशकृतस्नु	पुरोहित
२१७	वण्या	वर वंगन	जोशी
२१८	वछगइया	कविस्त	वाजपेयी
२१९	बगेरवाल	वाशिष्ठ	शुक्ल
२२०	बसुखेड़ा	अत्रि	शुक्ल
२२१	बसेटिया	वाशिष्ठ	शुक्ल
२२२	वासोल्या	गर्ग	दीक्षित
२२३	बछीवाल	विश्वामित्र	व्यास
२२४	बबड़	बृहस्पति	जोशी
२२५	बहीनिया	भार्गव	दीक्षित
२२६	वरथौनिया	भारद्वाज	पांडे
२२७	बढ़ौलिहा	जैमिनी	श्रोत्रिय
२२८	बादरा	अत्रि	शुक्ल
२२९	बावणोधा	कौशिक	अग्निहोत्री
२३०	बागोलवाल	काशकृतस्नु	पुरोहित
२३१	बादरीवाल	काशकृतस्नु	पुरोहित
२३२	बावर वाल	अत्रि	शुक्ल
२३३	बावलिया	धनञ्जय	त्रिवेदी
२३४	बामोरिया	धनञ्जय	त्रिवेदी
२३५	बांदौलिया	भारद्वाज	पांडे
२३६	बाघौरिया	भार्गव	दीक्षित

	शासन	गोत्र	पदवी
	(बागोरया)	भार्गव	दीक्षित
२३७	बासोद्या	यमदग्नि	श्रोत्रिय
२३८	बासोड़वाल	यमदग्नि	श्रोत्रिय
२३९	बारल्या	सांकृत	पांडे
२४०	बावल्या	उपमन्यु	दीक्षित
२४१	बावन्या	अत्रि	शुक्ल
२४२	बासोल्या	अत्रि	शुक्ल
२४३	बिचौलिया	कविस्त	बाजपेयी
२४४	बीमूवाल	वत्स	मिश्र
	(बींवाल)	,,	,,
२४५	बुवाल	यमदग्नि	श्रोत्रिय
२४६	बेण	मौदगल्य	पुरोहित
२४७	बोगड़	अत्रि	शुक्ल
२४८	बोहरा	धनञ्जय	त्रिवेदी
२४९	भरीडवाल	अंगिरा	जोशी
२५०	भतरो	गर्ग	दीक्षित
२५१	भरोल्या	गर्ग	दीक्षित
२५२	भरमुनिया	धनञ्जय	त्रिवेदी
२५३	भल	भारद्वाज	पांडे
२५४	भलनपरी	मौदगल्य	पुरोहित
२५५	भादोलिया	अत्रि	शुक्ल

	शासन	गोत्र	पदवी
२५६	भालिका	कौशिक	अग्निहोत्री
२५७	भाड़वाड़	काश्यकृतम्नु	पुरोहित
२५८	भारा	जैमिनी	श्रोत्रिय
२५९	भाउका	मौदगल्य	पुरोहित
२६०	भारंगा	बृहस्पति	जोशी
२६१	भादुपोता	शौनक	द्विवेदी
२६२	भारंडवाल	सांकृत	पांडे
२६३	भिवाल	अत्रि	शुक्ल
	(भींडवाल)	,,	,,
२६४	भिडा	गौतम	अग्निहोत्री
	(भैंडा)	,,	,,
२६५	भीलवार	जैमिनी	श्रोत्रिय
२६६	भीतिया	बृहस्पति	जोशी
२६७	भीड़वाल	अत्रि	शुक्ल
२६८	भूंवरा	अंगिरा	जोशी
२६९	भूंसना	भार्गव	दीक्षित
२७०	भोगर	कश्यप	तिवारी
२७१	मरतु	जैमिनी	श्रोत्रिय
२७२	मंगोलिया	वत्स	मिश्र
२७३	माला	अंगिरा	जोशी
२७४	माहोनियां	कविस्त	बाजपेयी

	शासन	गोत्र	पदवी
	(मावल्या)	कविस्त	वाजपेयी
२७५	मानौरिया	कौंडिन्य	अग्निहोत्री
२७६	मादानी	काशकृतस्नु	पुरोहित
२७७	माठा	गौतम	अग्निहोत्री
२७८	मांडोल्या	भारद्वाज	पांडे
	(मांचोलिया)	,,	,,
२७९	मारश्या	भारद्वाज	पांडे
२८०	मासालवावाल	मौदगल्य	पुरोहित
२८१	मासोल्या	वरवंगन	जोशी
२८२	मारस्था	विश्वामित्र	व्यास
२८३	मामडोल्या	विश्वामित्र	व्यास
२८४	मागरखोइया	अत्रि	शुक्ल
	(मोरोलिया)	,,	,,
२८५	मुदडत	अघमर्षण	जोशी
२८६	मुछमरोड़ा	कविस्त	वाजपेयी
२८७	मुडसैनिया	कश्यप	तिवारी
२८८	मुड़ला	कौशिक	अग्निहोत्री
२८९	मुडजोरिया	जैमिनी	श्रोत्रिय
२९०	मुवारस्वामी	पाराशर	मिश्र
२९१	मुड़ाजरे	भारद्वाज	पांडे
२९२	मुसरान	मार्गव	दीक्षित

	शासन	गोत्र	पदवी
	(मुसरिहा)	मार्गव	दीक्षित
२९३	मुहरेनियां	सांकृत	पांडे
२९४	मूंदोरिया	वत्स	मिश्र
२९५	मेन	कश्यप	तिवारी
२९६	मेलु	विश्वामित्र	व्यास
२९७	मेडवाल	विश्वामित्र	व्यास
२९८	मोसवाल	काशकृतस्नु	पुरोहित
२९९	मोरीय	जैमिनी	श्रोत्रिय
३००	मोटाल्या	जैमिनी	श्रोत्रिय
३०१	मोर्मानया	जैमिनी	श्रोत्रिय
३०२	मोदवाल	धनञ्जय	त्रिवेदी
३०३	मोकचुम्बा	पाराशर	मिश्र
३०४	मोपल	वाशिष्ठ	शुक्ल
३०५	रस्सीवाल	कश्यप	तिवारी
३०६	रजमोरिया	गौतम	अग्निहोत्री
३०७	रहुतिवा	मार्गव	दीक्षित
३०८	रांडौलिया	कौंडिन्य	अग्निहोत्री
३०९	राजोरिया	गौतम	अग्निहोत्री
	(राजोर)	,,	,,
३१०	रामपुरिया	भारद्वाज	पांडे
३११	राणोल्या	बृहस्पति	जोशी

	शासन	गोत्र	पदवी
३१२	रूखवाल	कौंडिन्य	अग्निहोत्री
३१३	रुणेजा	भार्गव	दीक्षित
३१४	रैवाडिया	भारद्वाज	पांडे
३१५	लखाणा	अंगिरा	जोशी
३१६	लाटा	जातुकर्ण्य	जोशी
३१७	लापस्यामोर	जातुकर्ण्य	जोशी
३१८	लिदण्या	वत्स	मिश्र
३१९	लुंडेरिया	वत्स	मिश्र
३२०	शलकिया	गर्ग	दीक्षित
३२१	शमरोडिया	गौतम	अग्निहोत्री
३२२	सरमोर	भारद्वाज	पांडे
३२३	संकटतोड	भारद्वाज	पांडे
३२४	सहजचौकीवाल	भारद्वार	पांडे
३२५	समधा	मौदगल्य	पुरोहित
३२६	सरसालिया	वाशिष्ठ	शुक्ल
३२७	सरसोल्या	वाशिष्ट	शुक्ल
३२८	सवदो	वृहस्पति	जोशी
३२९	सरसोल्या	शांडिल्य	अग्निहोत्री
३३०	संचोरया	शौनक	द्विवेदी
३३१	सरवला,	गौतम	अग्निहोत्री
३३२	समदरवाल	काशकृतस्नु	पुरोहित

	शासन	गोत्र	पदवी
३३३	सपोज	काशकृतस्नु	पुरोहित
३३४	सकलगाल	अंगिरा	जोशी
३३५	साकसिंया	कविस्त	वाजपेयी
३३६	सारोल्या	कश्यप	तिवारी
३३७	साकटा	कश्यप	तिवारी
३३८	सारसीवाल	कौंडिन्य	अग्निहोत्री
३३९	सासदा	काशकृतस्नु	पुरोहित
३४०	साड़ोल्या	गौतम	अग्निहोत्री
३४१	सांजानेरिया	धनञ्जय	त्रिवेदी
३४३	साड़ोलिया	भारद्वाज	पांडे
३४३	सामरे	भारद्वाज	पांडे
३४४	सान	मौदगल्य	पुरोहित
३४५	सांगानेरिया	वत्स	मिश्र
३४६	सातुखरा	वृहस्पति	जोशी
३४७	सागवान	शांडिल्य	अग्निहोत्री
३४८	सिड़ोल्या	अंगिरा	जोशी
३४९	सिरोल्या	कश्यप	तिवारी
३५०	सिरोइया	कश्यप	तिवारी
३५१	सिकरवाल	कौंडिन्य	अग्निहोत्री
३५२	सीवर	भार्गव	दीक्षित
३५३	शुभका	जैमिनी	श्रोत्रिय

	शासन	गोत्र	पदवी
३५४	मुड़वाल	कौशिक	अग्निहोत्री
३५५	मुपोज	गौतम	अग्निहोत्री
३५६	मुरभटवाल	धनञ्जय	त्रिवेदी
३५७	मुरचान्या	भार्गव	दीक्षित
३५८	मुरोल्या	भारद्वाज	पांडे
	(संगेला)	,,	,,
	(मुरीपिया)	,,	,,
३५९	मुभटा	विश्वामित्र	व्यास
३६०	मुस्वान्या	सांकृत	पांडे
३६१	सेयल	कश्यप	तिवारी
३६२	सेलुपरया	जैमिनी	श्रोत्रिय
३६३	सोपल्या	अत्रि	शुक्ल
३६४	सोनाइयां	कौंडिन्य	अग्निहोत्री
३६५	सोनवाल	भारद्वाज	पांडे
३६६	सोंधारिया	भार्गव	दीक्षित
३६७	सोंकरवाल	शौनक	त्रिवेदी
३६८	हरितवाल	भारद्वाज	पांडे
	(अगरिया)	,,	,,
	(हातीवाल)	,,	,,
३६९	हरोल्या	कौशिक	अग्निहोत्री
३७०	हरदान्या	कौंडिन्य	अग्निहोत्री

३७१	हरसान्या	अत्रि	शुक्ल
३७२	हरवाणी	वामदेव	जोशी
३७३	हयग्रीवा	वामदेव	जोशी
३७४	हिकलारा	मौदगल्य	पुरोहित
३७५	हृदया	जैमिनी	श्रोत्रिय

प्रत्येक ब्राह्मण बन्धु के लिये अपने से सम्बन्धित ६ बातो का ध्यान रखना परम् आवश्यक है। जो निम्न हैं:- गोत्र, अवटंक या शासन, शर्मा, वेद, प्रवर, शिखा, कुलदेवी गणपति और पदवी ॥

कहा भी है—

गोत्र शर्मावटंकश्च
वेदञ्च प्रवरा शिखा।
देवि गणपति पदवीं
नवैते ब्राह्मणस्मिता ॥

अब १०८ जाति के ब्राह्मण समुदाय के नाम दिये जा रहे हैं। जो निम्न प्रकार हैं—

(१) श्री आदि गौड़ ब्राह्मण (२) मेडतवाल ब्रा. (३) औदुम्बर ब्रा. (४) कापित्थ ब्रा. (५) श्री गौड़ ब्राह्मण नये (६) वटमूल ब्राह्मण (७) पाल ब्रा. (८) शृगालवाट ब्रा, (९) मैताले ब्रा. (१०) गाल्व ब्रा. (११) औदिच्य ब्रा. (१२) टोलक ब्रा. (१३) श्रीमालि ब्रा, (१४) सिन्ध ब्रा. (१५) चातुर्वेदिम्होड ब्रा. (१६) भागड ब्रा. (१७) त्रिवेदी-म्होड ब्रा, (१८) धेनोजाम्होड ब्राह्मण (१९) इग्यर्षणाम्होड ब्रा. (२०) मल्लम्होड ब्राह्मण (२१) भीतर खेडावाल ब्रा. (२२) बाज खेडावाल ब्रा. (२३) खड़ायते ब्रा. (२४) जाम्बु

ब्राह्मण (२५) झारोला ब्रा, (२६) अन्तरवेदी ब्रा. (२७) उनेवाल ब्राह्मण (२८) कंडोल ब्रा. (२९) वायडा ब्रा. (३०) गिरिनारे ब्राह्मण (३१) गुग्गुलि ब्रा. (३२) बबुरु ब्रा, (३३) तुलव ब्रा. (३४) केरल ब्रा. (३५) गोराष्ट ब्रा. (३६) वेलंजीग्रामवासी ब्राह्मण (३७) मिथुनहर ब्रा. (३८) पातित्यग्राम ब्रा. (३९) द्वत्रिंशदग्राम ब्रा. (४०) दशगोत्र ब्रा. (४१) त्रिहोत्र ब्रा (४२) काराष्ट्र ब्रा. (४३) चित्पावन कोकणस्थ ब्रा (४४) महाराष्ट्र ब्रा, (४५) पन्द्रह प्रकार के द्राविड ब्रा. (४६) नियोगी ब्रा. (४७) पांचाल ब्रा. (४८) छः प्रकार के तैलंग ब्रा. (४९) कर्णाटका ब्रा. (५०) शिरपतन मौताला ब्रा (५१) हैव ब्रा. (५२) यम्बराद्रि ब्रा. (५३) कंदाव ब्रा. (५४) दायमा ब्रा. (५५) गोमित्र ब्रा. (५६ रायकवाल ब्रा. (५७) वाल्मीक ब्रा. गुर्जर संप्रदायी (५८) मथुरा के चौबे (५९)सूर्यध्वज गौड ब्रा. (६०)नट्ट नागर गौड ब्रा. (६१)मुख-सेन गौड़ ब्रा (६२) दालभ्य गौड़ ब्रा, (६३) सौरम गौड ब्रा. (६४) वासिष्ठ गौड ब्रा. (६५) हर्याणा गौड़ (६६) गंगापुत्र गौड़ ब्रा. (६७) श्री गौड ब्रा. (६८) मालवी गौड ब्रा (६९) प्रश्नोत्तरे नागर ब्रा. (७०) भारड नागर ब्रा. (७१) चित्रोड़े नागर ब्रा. (७२) साठोदरे ब्रा. (७३) बिस-नगरे ब्रा. (७४) वड़नगरे ब्रा. (७५) चौरासी मेवाडे ब्रा. [७६] त्रिवाडीमेवाडे ब्रा. [७७] भटमेवाडे ब्रा. [७८] दिशा-वाल ब्रा. [७९] शिवल्ली ब्रा. [८०] कोट ब्रा. [८१] माध्या

दिनिया ब्रा. [८२] अभिल्ल ब्रा. [८३] मैत्रायणी ब्रा, [८४] मैथिल ब्रा. [८५] नन्दवाण ब्रा० [८६] नार्मदीय ब्रा. [८७] भार्गव ब्रा [८८] गरुड़ गलिया ब्रा [८९] पुष्करणे ब्रा० [९०] भारतीय ब्रा [९१] नादोर्या ब्रा [९२] कांबोद सिद्ध ब्रा [९३] सोमपुरा ब्रा [९४] कान्यकुब्ज ब्रा० [९५] सानाढ्य ब्रा [९६] लेटवास ब्रा [९७] पालीवाल ब्रा. [९८] आभीर ब्रा (९९) औडिये ब्रा [१००] गयावाल ब्रा. [१०१] वलादरे ब्रा [१०२] चन्द्रसर ब्रा. [१०३] नारदी ब्रा. [१०४] खेदुवे ब्रा (१०५) तलाजिये ब्रा. [१०६] कपिल ब्रा. (१०७) मित्रगौड ब्रा० (१०८) सारस्वत ब्रा०

इति समाप्तम्

छप रहा है :—

ब्राह्मण पथ प्रदीप

भाग (२)

इस भाग में ज्योतिष सम्बन्धी जानकारी बड़े सरल ढङ्ग से दी गई है। थोड़ा पढ़ा हुआ व्यक्ति भी इस ग्रन्थ की सहायता से बहुत कुछ सीख कर लाभ प्राप्त कर सकता है। इस ग्रन्थ के द्वारा पञ्चाङ्ग देखना, गोचर, ज्योतिष गणित व फलित, मुहूर्त्त आदि का अभ्यास आसानी से किया जा सकता है। आशा है आप इस ग्रन्थ से अधिक से अधिक लाभ उठाने का प्रयत्न करेंगे।

ज्योतिषाचार्य :—

पं० भगवान सहाय पांडे